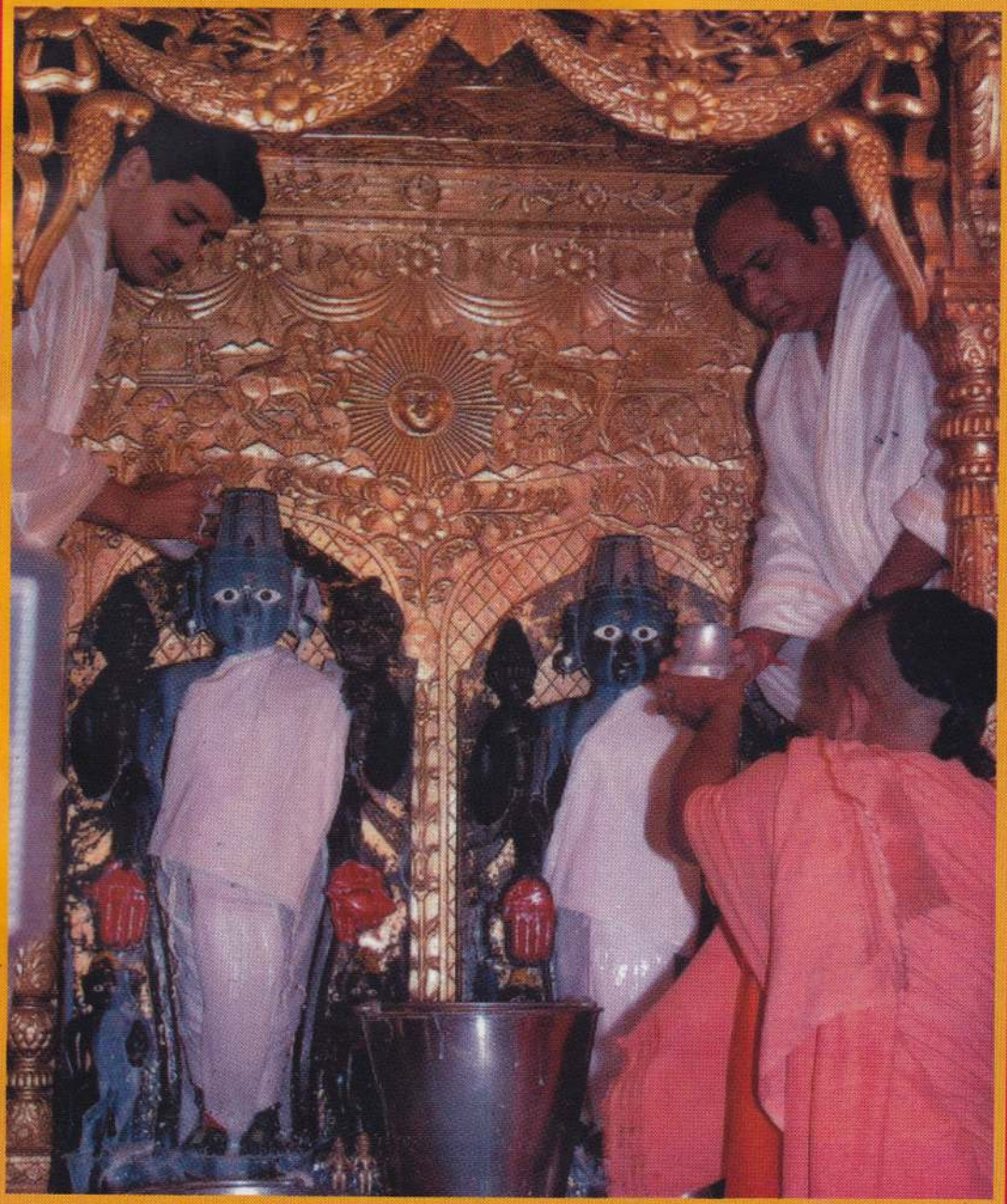
SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

APRIL 2005



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



राणीप मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सापावाडा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





करिया मंदिर में श्री बाल स्वरूप कष्टभंजन देव का पाटोत्सव अभिषेक प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ।



कांकरिया मंदिर में ब्रह्मभोजन में प्रसाद लेते हुए भूदेव तथा हरिभक्त ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ अप्रैल -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमें परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्री स्वामिनारायण म्युझीयम	५
४.	इस कलियुग में प्रभु स्वामिनारायण सत्य हैं	९
५.	स्वश्लाघा स्वमुखने च	१०
६.	आग्रह विना का अद्‌भुत संकल्प	१२
७.	सत्संग सुरभि : भगवान भजने के लिए स्वाद क्या ?	१५
८.	भक्तवत्सल भगवान श्री स्वामिनारायण	१६
९.	सत्संग बालवाटिका	१८
	(१) यह कैसी कसौटी ?	
	(२) दंभ कहां तक चल सकता हैं ?	
१०.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अनंतजीवों का भवसागर में से उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर परमात्मा का अवतार होता है । जब परमात्मा मनुष्य रूप में इस पृथ्वी पर विचरण करते है, तब भागवत धर्म का स्थापन करते हैं । साथ ही स्वयं उन धर्म मर्यादाओं का पालन करके जागतिक जीवों से भी धर्म मर्यादा का पालन कराते है । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का प्राकट्य तथा पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण का प्राकट्य चैत्र शुक्ल नवमी के पवित्र दिन हुआ था । यहभी एक असाधारण घटना है । मर्यादा पूर्वक भागवतधर्म तथा समाजधर्म की स्थापना हेतु स्वयं जीवन में उतारकर लोगो को संस्कारोसे संस्कृत करने के लिए मर्यादा पूर्वक आचरण किया । इसलिए तो अपने हिन्दू धर्म मे मनुष्य को संस्कारित करने के लिए सोलह संस्कारो का अति महत्व वर्णित है । जिसमें मुख्य-मुख्य संस्कारो को हम अच्छी तरह करते हैं । चौल संस्कार, उपनयन संस्कार, लग्न संस्कार, इत्यादि का जीवन में तथा समाज में अति महत्व है । वैज्ञानिक रहस्य भी छिपा हुआ है । जिस में उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यह विधिकी जाती है, इस विधि से मनुष्य के मस्तिक में सात्विकता के ज्ञान का उदय होता है । सात्विक ज्ञान ही जीव को परमेश्वर की पहचान करा सकता है । जिससे जीव का आत्यंतिक मोक्ष संभव है । परमेश्वर का अवतरण भी जीव को आत्यंतिक मोक्ष देने के लिए होता है । इस महान लक्ष्य में से कभी जीव विचलित न हो यही मनुष्य जीवन की सार्थकता है । हम सभी का लक्ष्य भी आत्यंतिक मोक्ष ही है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मार्च - २००५

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पाटोत्सव अभिषेक स्वहाथों से किये प.भ. बलदेवभाई पटेल (इटादरावाला) के यहां पजार्पण, नवा वाडज ।

२. सिंगाली (ता. कपडवंज) गांव के मंदिर में श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी की आरती उतारने पधारे ।

३. नारायणपुरा (ता.कडी) मंदिर के पाटोत्सव, पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

४. धरमपुर (ता. कडी) गांव में प.भ. वासुदेवभाई गज्जर द्वारा आयोजित श्रीमद भागवत पारायण तथा जपयज्ञ प्रसंग पर पदार्पण ।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (सूचित) खात पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।

६. बालवा गांव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

११-१२. चराडवा मंदिर में तथा भुज मंदिर में पाटोत्सव अभिषेक स्वहाथों से किये ।

१३. श्री सर्वोपरि श्री नरनारायण देव का १८३ वां पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से किये तथा संत महादीक्षा विधि स्वबरद हाथों से किये । प.पू.लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री के शुभ हाथों से श्री स्वामिनारायण म्युजियम का खातपूजन धूम धाम से सम्पन्न किया गया ।

१४. सापावाडा (ता. इडर) मंदिर में पाटोत्सव अभिषेक अपने हाथों से किये ।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरियाबाल स्वस्म कष्ट भंजन देव का पाटोत्सव अभिषेक स्वहाथों से किये और ब्राह्मण भोज प्रसंग पर कांकरिया मंदिर में दर्शन - आशीर्वाद देने पधारे ।

१६. खाण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर महेसाणा गांव में जे.लल्लुभाई एन्ड सन्स में पदार्पण ।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण (राज.) पाटोत्सव अभिषेक स्वहाथों से किये ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतीज महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

२०. राणीप मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । प.भ. भरतभाई खोडीदास पटेल के यहां पदार्पण, राणीप ।

२१. प.भ. प्रबोधभाई छगनलाल झाला के यहां पदार्पण, गांधीरोड । सायंकाल जीरागढ मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२३. प.भ. परसोतमभाई हरजीभाई शिंगाळा के यहां पदार्पण, बापुनगर ।

२४-२५. सुखपर (कच्छ) फूलदोलोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२७ से ४ अप्रैल तक. अमेरिका में सत्संग प्रचारार्थ पदार्पण ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।



गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने शहर तथा गाँव-गाँव के हरिभक्तों के घर-घर पदार्पण किये । तथा प.पू. विद्यमान आचार्य महाराजश्री भी उसी मार्ग पर अग्रसर हैं । कारण यह कि अधिक से अधिक हरिभक्तों को सुखी करना है । अधिक से अधिक जीवात्माओं का कल्याण करना हैं । स.गु. वैराग्यमूर्ति निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

तमने मानशे पूजसे जेह रे ।
मोटा सुखने पामशे तेह रे ॥
अन्न धन आपसे अंबर रे ।
पशु वाहन वणी घर रे ॥
फलफूल दलं जल देशे रे ।
ते तो अखंड धामने लेश रे ॥
एह आदि जे आपसे वस्तु रे ।
एवा घरधारी गृहस्थ रे ॥
वणी पधरावशे पोताने घेर रे ।
करशे सेवा वणी सारी पेर रे ॥
वणी करसे सनमान एनुं रे ।
मारे करवुं छे कल्याण तेनुं रे ॥
एम आचारज थी कल्याण रे ।
थाशे सहु जीवनुं सुजाण रे ॥

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि प.पू. आचार्य महाराजश्री अनंत जीवों के कल्याण के लिए सत्संग में अहर्निश विचरण करते रहते हैं । इसमें लेशमात्र की स्वार्थ की भावना होती नहीं है । प.पू. बड़े महाराजश्री अनंत जीवों के कल्याणार्थ देश-



विदेश में छोटे-से बडे तक सभी के घर पदार्पण किये और बहुत सारे छोटे-बड़े मंदिरो का निर्माण कराकर उसमें श्रीहरिके स्वरूपो को प्रतिष्ठित किये । द्विशताब्दिका महोत्सव, शतामृत महोत्सव, रजत सुवर्ण जयंती, षष्टि पूर्ति महोत्सव जैसे ऐतिहासिक महोत्सवो का आयोजन करके सन्त हरिभक्तों को आत्यंतिक सुखप्रदान किया ।

श्रीजी महाराजके लिए निष्कुलानंद स्वामी लिखते हैं -

आ तो अनेक रीतशुं,
आव्या उद्धारवा अविनाश ।
जेम ज्वाला बडे शुद्धा शुद्ध ने
शुद्धा शुद्ध पलाणे मेघ ॥
शुद्धा सुद्ध समझे नहिं,
ज्यारे वायु वाय करी वेग ।
एम आज तार्या छे अपार रे,
गुणागुण न जोवा लगाट रे ।
जेमा मोटो सदाव्रतनी होय रे,
ते तो भुख्यानुं मुख न जोय रे ।
एम आज सदाव्रत मोटुं रे ।
बांध्यु छे तारवा जीव कोप्युं रे ।

श्रीजी महाराज के मार्ग पर अपने पूज्य महाराजश्री भी जीवों के गुण - अवगुण देखे विना उस जीवका कल्याण करने हेतु सतत घूमते रहे । आज निवृति हो जाने पर भी उन्ही अनेक जीवों के कल्याण को ध्यान में रखकर म्युजियम का खात पूजन

भी भगवान नरनारायणदेव के पाटोत्सव को ता. १३-३-२००५ के दिन श्रीहरि के आठवे वंशज लालजीश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजके हाथों से संपन्न किया गया । यह म्युजियम अपनी देख रेख में ही बने इसलिए बडे महाराजश्री म्युजियम स्थल पर निर्मित कुटी में प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक विराजमान रहते है । ऋषिमुनियों की अपेक्षा यह तप अत्यंत निराला है । जब तक सूर्य चन्द्र तपेंगे तब तक इस म्युजियम में स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी की वस्तुयें आश्रित भक्तो को आत्यंन्तिक कल्याण हेतु दर्शन देती रहेंगी । भगवान के संबंन्ध की वस्तुयें भी इस संग्रह स्थान में सर्वोपरिता को प्राप्त करेंगी जिसकी प्रशंसा सुनकर देश विदेश के टूरिस्ट दर्शन किये विना रह नहीं सकते हैं ।

भगवान श्री स्वामिनारायण के स्पर्श को प्राप्त वस्तुयें कोई सामान्य नहीं होंगी अक्षरधाम में रही हुई वस्तुओं की तरह ये वस्तुये दिव्य एवं कल्याण कारी हैं । अपने महाराज के स्वस्म को या नित्य पूजा पेटी को मंदिर के स्टोर पर प्राप्त करते हैं बाद में नरनारायणदेव को प्रसादी कराते हैं या महाराजश्री के हाथ से प्रसादी का कराते हैं । बाद में उस प्रसादी की वस्तु को साधारण नहीं मानते हैं। बल्कि प्रत्यक्ष कल्याणकारी भाव लाकर ही पूजते हैं । इसी प्रकार जिस वस्तु को स्वयं परमात्मा ने स्पर्श किया हो वह प्राकृत कैसे हो सकती हैं । प्रसादी की वस्तु में कितना चमत्कार और आश्चर्यकारक गुण-धर्म है - जिसे दृष्टांन्त के साथ बताते हैं ।

(१) यात्राधाम जेतलपुर में बेनी बहन के घर चुडैल का उपद्रव था । यह चुडैल प्रतिरात्रि को बेनी बहन की भैंस के बच्चे को छत पर चढादेती थी । प्रातः गाँव के लोग एकत्रित होकर प्रतिदिन उस पंडरु को नीचे उतारते थे, यह क्रम प्रतिदिन होता था । एक दिन बेनी बहन जेतलपुर की परम भक्ता गंगाबा को यह बात बताई । इसलिए गंगाबा आशजीभाई के यहाँ से श्रीहरि जिस पत्थर पर स्नान किये थे उस पत्थर को लाकर बेनी बा के घर रख दिया और उनके घर की बला चली गयी । घर की दीवाल में चिपकाया हुआ वह पत्थर आज भी उस गाँव के उन्ही के वंशज श्री केशवलाल खोडीदास पटेल के घर में विद्यमान है ।

(२) स. स्वस्मानंद स्वामी की आत्मनिष्ठा होने के कारण कोई कभी दुःख होता तो कहते हम तो आत्माराम हैं शरीर के साथ अपना क्या सम्बन्ध ? आकाश को मूसक कुतर सकता है क्या ? लेकिन महाराज को यह अच्छा नही लगा और स्वस्मानंद स्वामी के शरीर में स्वंय रोग के स्म में प्रवेश किये । परिणाम स्वस्म अत्यंत पीडा के कारण चिल्लाने लगे और महाराज उन्हे देखने गये । महाराज ने कहा क्यों स्वामी ? आकाश को चूहा कुतरता हैं । महाराज ? बड़ी पीड़ा हो रही है । तो ऐसा करो, दादा खाचर की अगासी थपुआ, नरिया, इत्यादिका ध्यान करो । बाद में इन सभी का ध्यान कराकर पीड़ा से रहित किया । अपनी निष्ठा वाली वस्तुओं को आत्मनिष्ठा से भी अधिक महत्व दिया ।

(३) सारंगपुर हनुमानजी के शरण में जो अत्यन्त मलिन भूतप्रेतादि उपद्रव वाले जाते है उन्हे पुजारी प्रसादी की ढोल या गाड़ी के नीचे बैठाते है, उसका स्पर्श कराते हैं । प्रसादी की वस्तुओं के ताप को भूतादिक सहन नहीं कर सकते हैं ।

अपने पूज्य महाराजश्री का यह संकल्प है कि ऐसी दुर्लभ प्रसादी की वस्तुयें वैज्ञानिक ढंग से म्युजियम में सुरक्षित रखी जा सकती है । कारण यह कि -

"पुरुषोत्तम स्पर्श नीजे वस्तु रे ॥
न मळे जयां लगि उदे ने अस्त रे ॥
अशन वसन भूषन वाहन वसन जेह ॥
पुरुषोत्तम ने स्पर्शता, थयो शुद्ध सहुए तेह ॥
मायिक के अमायिक थयां, थयां गुणमय गुणातीत,
स्पर्शता परब्रह्म ने सहु थयां परम पुनीत ॥

ऐसे वासन, वस्त्र, वाहन, अलंकार, कागज, पत्थर इत्यादि गुणातीत पदार्थों को दुनियां के धर्म प्रेमी तथा प्राकृतिक सौन्दर्य प्रेमी

जनता को यह निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन सन्निकट भविष्य में होने वाला है। प्राकृतिक सौन्दर्य प्रेमी शब्द इसलिये कि यह म्युजियम सुन्दर वृक्षों से लता गुल्मों से, पक्षियों के कलरव से सुशोभित दिव्य वातावरण में तैयार किया जायेगा। पुरुषोत्तम नारायण के रहने का अक्षरधाम कैसा होता है शास्त्रों में जो वर्णित है वैसाही अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की प्रसादी की वस्तुओं को रखने का सुरम्य स्थान होना चाहिए।

वळी कल्याण कारी जे वस्तु (पदार्थ) रे।
पण पृथ्वी पर छे समस्त रे।
बहुते बड़े थाशे कल्याण रे।
स्पर्शि पामशे पदनिवारण रे॥
पण अवतार ना जे अवतारी रे।
वात तेनी जानजो न्यारी रे॥
जाणो पुरुषोत्तम नो स्पर्श रे।
ते तो सह थकी छेजो सरस रे॥
अमारा अंग संग नी वस्तु रे।
राखी जीवना कल्याण काज।
फरी फरी फेरो पडे, एवु नथी
करवुं आ बार॥
सहु जीवनो सामटो, आज करवो
छे उदार।
तेह सह सारु छापी दीधां चरण रे,
जे छे सुखना करण रे॥

जैसे पुरुषोत्तम नारायण की स्पर्श वाली मूर्ति तथा अन्य मूर्तियों में अन्तर है। उसी प्रकार भगवान के स्पर्श वाली वस्तु तथा जगत के अन्य वस्तु में भी फर्क है। जो इन सभी प्रसादी की वस्तुओं को म्युजियम में रखा जायेगा संयोगवश ये प्रसादीकी वस्तुये मूल सम्प्रदाय के मंदिरो में ही है। इस जगत के कल्याण के लिये भक्तों के दर्शन हेतु रखी जायेंगी। जिस प्रकार भगवान स्वामिनारायण ने उदारता से सभी को अपनी प्रसादी की वस्तु दिये थे वैसे ही जिन हरिभक्तों के पास प्रसादीकी वस्तुं हो वे म्युजियम में लाकर भेटं करें। देने वाले भगवान तथा लेने वाले भी भगवान ही हैं। भगवान के छठे वंशज प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी भगवान के स्वरुप ही हैं। प्रसादीकी वस्तु का दान अभी नहीं हो सका तो कब होगा, सायद जब दान करने के समय आयें तब तक देर हो गयी रहेगी।

वणी अमारा अंगनुं अंबर रे,
बहु स्पर्शेल मारुं सुंदर रे।
एह प्रसादीनुं जेह पट रे,
मळे टळे सर्व संकट रे॥
एह वस्त्र अनुपम अति रे,
थाय पूजता परम प्रायति रे॥
अति माहात्म्य एनुं अतुल्य रे
कहो क्यांथी मळे एह मूल्ये रे॥
जे जे मारा संबंन्धनी वस्तु रे
न मळे मोतना उदय अस्त रे॥
जणस अम संबंन्धनी जेजे रे।
छे ए कल्याणकारी मानी लेजे रे।
ते तो राखी छे अमे अपार रे
सहजन अरथे आवार रे॥
नख शिखा लागी निरधार रे
राखी स्पर्शी वस्तु करी प्यार रे।
स्पर्शी चीज वस्तु बहु पर कारे रे,
अडी होय जे अंगे अमारे रे॥
ते तो सर्वे छे कल्याणकारी रे।
माटे राखी छे अमे विचारी रे॥

भगवान कहते हैं कि ये सभी वस्तुयें सभी के हित के लिए रखे हैं। सर्वजीव हितावह अर्थात् मानव मात्र के कल्याण करने हेतु इन वस्तुओं को पूजा के लिए दिये थे या सुरक्षित रखने के लिए दिये थे। लेकिन अब ये वस्तुये पुनः महाराज को वापस देना है क्योंकि इन वस्तुओं के दर्शन से सर्वजीव हितावह का भाव चरितार्थ हो सकेगा। महाराज ने अपने अपर स्वरुप प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के रुप में अब हमारे पास से मांग रहे हैं। तो इस अवशर का लाभ इसलिये भी लेना चाहिए कि कालान्तर में भगवान की प्रसादी की वस्तु हम रख रखाब न कर सके या हमारी संताने उसकी कीमत न कर सकी तो महान अनर्थ हो सकता है, अतः इसका ध्यान रखकर अवश्य भैंट करना चाहिए।

सर्वोपरि भगवान का सर्वोपरि म्युजियम बने दुनिया के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बने इस हेतु से तथा अहमदाबाद की सर्वोत्तम अयाजबी बने, इस हेतु से भी सत्संगी लोग आर्थिक योगदान करके सहभागी बने।

भगवान स्वामिनारायण का यह कार्य स्वयं भगवान स्वामिनारायण ही करने वाले हैं । परंतु अपने जीव का कल्याण हो, महाराजकी प्रसन्नता मिले, इसमें हम निमित्त बने । महाराज ने हमें लक्ष्मी दिया है तो उसका सदुपयोग करें । प.पू. महाराजश्री का स्वभाव अयाचक है इसलिये किसी से मांगेगे नहीं, लेकिन बिन मांगे हम स्वयं सहभागी बनकर अपने जीवन को चरितार्थ करें ।

खात मुहूर्त प्रसंग पर सभा में लक्ष्मीनारायण देव पीठाधिपति प.पू. राकेशप्रसादजी महाराज ने अपने आशीर्वाद में बताया कि प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जब से लालजी महाराजथे तब से आजतक सतत एक स्वस्थ में संप्रदाय की सेवा किये है । आपकी जितनी प्रशंसा की जाय कम ही है । श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए लक्ष्मी की कभी कमी न रहे ऐसी श्री लक्ष्मीनारायण देव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आर्शीवचन में बताया कि हम निवृत्त में समय बिताने के लिए यह प्रवृत्ति प्रारंभ नहीं किये है । परंतु स्वामिनारायण म्युजियम के आयोजन की प्रवृत्ति के लिये यह प्रवृत्ति ली हैं । महाराज ने जो व्याख्या की है कि अनन्य स्नेह का नाम ही भक्ति है । परंतु महाराज ने जेतलपुर के वचनामृत में कहा था कि भगवान के लिए प्रवृत्ति करनी चाहिए, भगवान की प्रसन्नता के लिए करनी चाहिए यह भी एक भक्ति ही है । श्रीजी महाराज केप्रसादीकी वस्तुस्मी अमूल्य मूली, वारसा सभी नित्य के लिए सुरक्षित रहे, तथा सभी लोग इसका दर्शन कर सकें, सभी के जीवों का कल्याण हो सके,इस हेतु से श्री स्वामिनारायण म्युजियम का आर्किटिक एवं इंजिनियर भी स्वयं श्रीजी महाराज ही है । हम महाराज को विन्ती करतें हैं कि हम सभी का जो अच्छा हो तो ठीक अच्छा न होतो खराब भी न हो ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने इस प्रसंग पर अपने आशीर्वचन में बताया की यह कार्य कोई व्यक्तिगत नहीं है। महाराजकी सेवा करने की तथा महाराज को प्रसन्न करने का यह अवशर मिला है ।

इसके लिए १० करोड का खर्च करना हो तो भी हम व्यक्गित तैयार है । धर्मवंशी आचार्य के लिये अपने इष्टदेव कहते हैं कि -

जेम ये बाणे तेम बणजो रे ।
एनाकाम काम मां भणजो रे ॥
एनी मानजो सहु आगन्या रे ।
वर्तशोमां कोये वचन विना रे ॥

स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण करने के लिए प.पू. आचार्य महाराजश्री कट्टिबद्ध है । तो इस कार्य में सत्संगी मात्र तन, मन, धन, वचन से लगजाये । इसी में श्रीहरि की प्रसन्नता है गुरुऋण से मुक्त होने का यह शुभ अवसर है । यही आज्ञा है ।

स्थल :
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
टर्फ स्कुल के सामने ए.आई.सी.
नारणपुरा पाछळ
नारायणपुरा, अहमदाबाद-१३.
फोन : २७४१९५९७
फेक्स : २७४९९५९७

पुनः प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वादात्मक आज्ञा से नित्यमनन तथा अभ्यास करने के योग्य शास्त्र ''वचनामृत अध्ययन'' तथा इष्टदेव श्रीहरि की उपासना का बलबर्धक ''ऐश्वर्य दर्शन'' तथा ''चौबीस एकादशी की कथा'' का पुनः प्रकाशन हो गया है । जो अपने साहित्य केन्द्र से प्राप्त किया जा सकता है ।

नेपाल पुल्हाश्रम की यात्रा में जाने वाले यात्रिकों के लिये सूचना

नेपाल मुक्तिनाथ पुल्हाश्रम जाने के लिए वहाँ के सरकार के नियमानुसार परिचयपत्र पासपोर्ट, लायसन्स गवर्नमेन्ट द्वारा प्रामाणित किया हुआ प्रत्येक यात्रीको साथ रखना जरुरी है ।

विशेष जानकारी के लिए : ००९७७६१५२२६५१ (श्रीजी स्वामी)

इस कलियुग में प्रभु स्वामिनारायण सत्य हैं ।

यह एक ऐसे नवयुवान की बात है, जो आचार्य तथा संत के सत्संग से जिसका जीवन बदल गया । यह कोई काल्पनिक बात नही है । लेकिन १९८९ के बाद जीवन परिवर्तन वाले युवान के जीवन की सत्य घटना है ।

यह युवान १९७० की साल में भारत से लंदन स्थायी होने गया? जिसका नाम जेठालाल था । जेठालाल ग्रेज्युऐट के साथ में पुराण इतिहास का भी अध्ययन किया था । लेकिन भगवान में निष्ठा नहीं थी । भगवान को निराकार मानता था । स्वामिनारायण भगवान को नहीं मानता था । संप्रदाय के संतो में पूज्यभाव नहीं था । आचार्य महाराजश्री में भी देव भाव नहीं? बल्कि आचार्य को दूसरे पर अवलिम्बित मानता था । व्यसन का दोष भी हैं । उस में जो दोष थे वह सब हरिभक्तों में देखता था ।

प्रथम मिलन

१९८१वर्ष में भारत की यात्रा के समय संयोग वश आचार्य महाराज से भेंट हो गयी । सौम्य मूर्ति के प्रति थोडा आकर्षण हुआ। इसके बाद लन्दन वापस जाकर श्री स्वामिनारायण मंदिर(विल्स्टन)के प्रथम पाटोत्सव में महाभिषेक का दर्शन करने आया।

स्नेह मिलन तथा प्रथम परचा

अभिषेक करते हुए आचार्य महाराज श्री तथा घनश्याम महाराजश्रीका दर्शन करनें से मन में दिव्यता का अनुभव हुआ । आचार्य महाराज श्रीमें स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण का दर्शन किया । भगवान की दया की कोई सीमा नहीं, ऐसे पामर जीव को भी अपने स्वरूपका ज्ञान दिया । जन्म-जन्मान्तर तक उपासना करने पर भी स्वरूप का दर्शन नहीं होगा, लेकिन इस जीवका कल्याण करने के लिए करुणाभाव होकर इसको परचा दिया ।

दूसरा परचा

जैसे भगवान की दया का पार नहीं है ! उसी प्रकार जीव के कमजोरी का भी पार नहीं है । साक्षात् भगवान का दर्शन हुआ तो भी भगवान के प्रति निष्ठा नहीं आयी । श्रद्धा के बिना मात्र अभ्यासार्थ "सत्संगिजीवन" की कथा सुनने जाता । लेकिन जैसे-जैसे कथा सुनता गया वैसे वैसे भगवान के प्रति निष्ठा दृढ होती गयी । लेकिन व्यसन एक भी नहीं छोडा । थोडे दिन बाद कमर का बडा आपरेशन करवाना था । अपंगता की डर होने लगी और महाराजश्री से दया की भीख मांगने लगा ।

कोई ने दुखियो रे देखी न
खमाय.....दया आणी रे.....
स्वभाव छे पर दुःखहारी रे.....

भगवान तो ऐसे ही दयालु हैं, उसी स्वभाव के हमारे बडे महाराजश्री भी उसके गले में तुलसी की कंठी पहनाकर आशीर्वाद दिये । जेठालालको भी कंठी के उपर विश्वास आया । आपरेशन के समय भी डॉक्टरके कहने पर भी कंठी को नहीं उतारा । आपरेशन सफल हो गया । महीनाभर फीजियोथेरापी चली । फीजियोथेरापी के अंतिम दिन शावरमें स्नान करते करते गले की कंठी टूट गयी और सभी दाने बिखर गये । यह कंठी डेढ मास तक जेठालालकी रक्षा की । यह दूसरा परचा था ।

अंतिम परिवर्तन

जेठालालको अपनी पामरता तथा भगवान स्वामिनारायण की महानता समझमें आगयी । भगवान के महात्म्य को अधिक समझने के लिए तथा निष्ठा को दृढ करने के लिए भुज मंदिर के एक विद्वान संत से गीता तथा शिक्षापत्री का सघन अध्ययन किया । लालजी महाराजश्री के सानिध्य, सेवन तथा आशीर्वाद से सभी व्यसन हट गये । आज श्रीस्वामिनारायण भगवान में अचल निष्ठा रखकर यथाशक्ति सत्संग की सेवा कर रहे हैं ।

श्रीजी महाराज ने वचनामृत में कहा है कि कीसी को सन्तान या धन दौलत देना हमें नहीं आता, लेकिन जीव का कल्याण कैसे हो यह आता है । आचार्य महाराज श्री, लालजी महाराजश्री तथा संतो के माध्यम से जेठालाल के जीवन में परिवर्तन आगया । श्रीजी महाराजने जोबनपगी को गदहा में से गाय बनाया था । जेठालाल का जीवन इतनी आध्यात्मिकतावाला अभी नहीं हुआ है, लेकिन गदहा में से घोडा बनाने का उदाहरण जेठालाल जरुर हुआ है ।

अपने सम्प्रदाय में आज भी अनेक परचे दिखाई देते है । हरिभक्तों के ध्यानाकर्षण हेतु यहां एक परचा की बात लिखी है । कोई इसे काल्पनिक न समझे, यह यथार्थ है ।

आ कलियुग मां परचा पूरे प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे ।

(जेठालाल द्वारा कथित वृत्तांत का संकलन)

स्वश्लाघा स्वमुखने च

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

सहज आनंद के संदेशक श्री सहजानंद स्वामी "शिक्षापत्री" के ३७ वें श्लोक में कहते हैं "स्वश्लाघा स्व मुखेन च" अर्थात् अपने मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए । सभी शास्त्रो का ज्ञान प्राप्त करना सरल हैं परंतु "आत्मश्लाघा वृत्ति" को अंत:करण में से बाहर निकालना बहुत कठिन है ।

कितने लोगो को प्रशंसा बहतु अच्छी लगती है । कितनी बार तो स्वयं अपनी प्रशंसा दूसरे के सामने करने लगते हैं । शिक्षापत्री के कथनानुसार आत्मश्लाघा की वृत्ति से अलग रहना चाहिए ।

प्रशंसा यह तो अच्छी बात है, परंतु उस की एक मर्यादा होनी चाहिए, दूसरे को अच्छी लगे और सामने वाला खुद आपकी प्रशंसा करने का इच्छुक हो जाय, अन्यथा आपकी प्रशंसा उसे भार लगने लगेगी स्वयं की प्रशंसा से किये हुए कार्य का अवमूल्यन होने लगता है ।

"प्रशंसा तो खुदा को प्यारी" इस नियमानुसार प्रशंसा अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रभाव डालती है । विवेकी मनुष्य को नम्र बनाती है । मूर्ख मनुष्य को अहंकारी बनाती है, और दुर्बल मन को मदहोश कर देती है । प्रशंसा दूसरे के सद्‌गुणो को प्रगट करने का एक साधन है ।

उपरोक्त बात से यह सीखने लायक है कि जब कोई अपनी प्रशंसा करे तब नम्र होकर सुनना चाहिए उस प्रशंसा से फूल नहीं जाना चाहिए । दूसरी बात यह कि यदि आप को यह खबर हो कि सामने जिस व्यक्ति की आप प्रशंसा कर रहे हैं वह मूर्ख है तो उसकी प्रशंसा न करें अन्यथा वह अधिक अहंकारी हो जायेगा और न करने योग्य काम भी कर बैठेगा ।

किसी की अधिक प्रशंसा नहीं करनी चाहिए । यदि किसी में प्रशंसा करने योग्य गुण हों तो उन गुणों को अपने में उतारना चाहिए । कोई अच्छा, परोपकारी, दानवीर हो उसकी आप प्रशंसा करो या न करो उसके हाथ से प्रशंसा के कार्य होते ही रहेंगे । जैसे किसी हीरे की प्रसंसा न की जाय तो हीरे की चमक कम नहीं हो जायेगी ।

कोई व्यक्ति स्वप्रशंसा को पचा पाता हैं, कोई नहीं । थोडा भी कोई अपनी प्रशंसा करे तो अहं आजाता है, यही बार-बार अहं आता रहे तो मिथ्याभिमान हो जाता है, जिससे उसका पतन अवश्यम्भावी है ।

यह मिथ्याभिमान मनुष्य का नाश कर देता है । क्योंकि मिथ्याभिमान के कारण दूसरे को अपमानित करता रहता है । इसलिए जब कोई प्रशंसा करे उस समय नम्र होना चाहिए । प्रशंसा करनेवाले व्यक्ति से कहना चाहिए कि मुझमें अभी क्या कमी है अथवा किस कार्य के करने से और प्रगति हो सकती यह आप सूचित करें ।

कितनी बार चालांक लोग अपनी प्रशंसा करके "येन केन प्रकारेण" अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए अयोग्य काम करालेते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति से सदा सावधान रहना चाहिए । यह मैंने किया .... यह मैंने किया..... यह मैं ..... मैं ..... तो बकरो की भाषा हो गयी, इसलिए स्वप्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए । शिक्षापत्री के ३७ वे श्लोक से कितनी उत्तम शिक्षा मिलती है । जिस बात को नरसिंह मेहता भी अपने शब्दो में कहते है ।

हूं करुं हुं करुं एज अज्ञानता,
शंकट तो भार जेम श्वान ताणे,
सृष्टि मंडाण सर्वे एणी पेरे,
जोग जोगेश्वरा को कजाणे ॥

I शाश्वत है परंतु May विनाश है। मन में अहम् लाना दुर्गुण स्मी शत्रु को आमंत्रण देना है । जिससे मनुष्य सारासार के भाव से रहित हो जाता है । इसलिए अहंको आने नहीं देना चाहिए । अहं कैन्सर रोग जैसा असाध्य रोग है । कई बार अज्ञानता के कारण गुस्ता की ग्रंथी बंध जाती है और अहम् (Ego) नामका दुर्गुण पैदा हो जाता है । जिससे वह स्वयं की प्रशंसा करता ही रहता है । अहं

के कारण उसका क्या नुकशान हो रहा है इसका ख्याल ही नहीं रहता है।

मतभेद अहं स्मी स्वभाव को या तो शंकाशील स्वभाव को उत्पन्न करता है । जब दो व्यक्तिका अहं आमने सामने टकराता है तब जीवन में तिराड़ पड़ जाती है । इसलिए जीवन में अहं को भूलकर नई योजना प्रारंभ करनी चाहिए । अहं भुलाने से आनंद चरमसीमा पर पहुंचजाता है ।

अहं तथा दंभ भी मनुष्य को निम्नकक्षा का बना देता है । अहं मन मे रखने से शांति में खलल होती है। स्वयं ऐसा विचारता रहता है कि अपना अहं किस तरह पुष्ट बना रहे ।

जो मनुष्य अहं रखता है वह समाज में फेंका जाता है । लोग उससे दूर होने लगते हैं । अभिमान या अहंकार से पतन होता है । किसी को ज्ञान का किसी को स्म का किसी को धन का अभिमान रहता है। इससे वह अपनी प्रशंसा करते थकता नहीं है । इसलिए व्यक्ति को चाहिए की अहं वाले के पास न बैठ कर भगवान के पास बैठे, अपने इष्टदेव के पास बैठे । अपने अहं को मैं को परमात्मा में समर्पित करदे तो परमात्मा उसका अवश्य कल्याण करेंगे क्योंकि परमात्मा तो अन्तर्यामी है । भक्त को विना मांगे देते है ।

शरीर मां रोगनो प्रवेश ।
मानवीने रोवडावे छे ॥
मनमां अहं नो प्रवेश ।
मानवीने रखडावे छे ॥
हृदयमां प्रशंसानो प्रवेश ।
मानवीने हार खवडावे छे ॥

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- स्मये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के विषय में जो नियमानुसार प्रति वर्ष फरवरी महिने की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होनेवाला प्रथम अंक में स्पष्ट किया जा रहा है ।

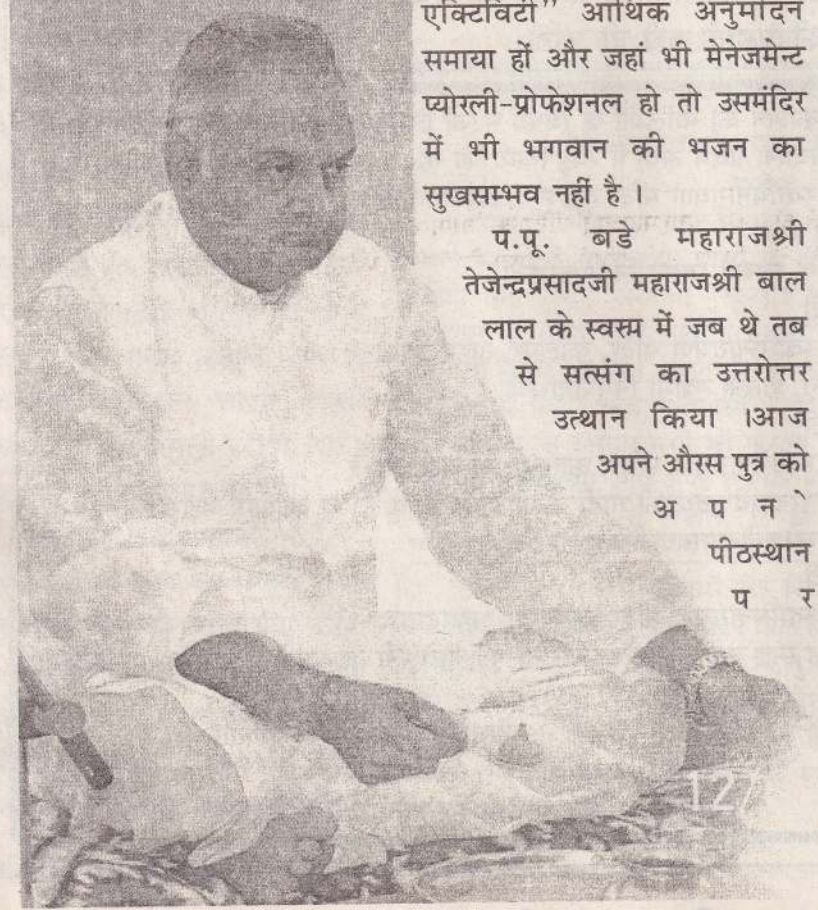
१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाश समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शा. स्वा. निर्गुणदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शा.स्वा. निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

आग्रह विना का अद्भुत संकल्प

लेखक - अतुल पोथीवाला



किसी बड़े कार्य का संकल्प करें या आयोजन का विचार करें तो उसे पूर्ण करने के लिये धन की, बल की, तथा अन्यान्यवस्तुओं की जरूरत पडती है । रातदिन एक करने पर ही यह कार्य सरल एवं संभव बनता है ।

बडी होस्पिटल या फाइवस्टार होटल करना हो या जगत विख्यात होना हो, या बडे-बडे मंदिरों का निर्माण करना हो यह सभी संभव है। परंतु उसमें "इकोनोमिक एक्टिविटी" द्वारा जिस किसी संस्था में प्रोफेशनल प्रचार ही एक मात्र आशय रहता है । अर्थशास्त्र के सिद्धांत अनुसार जहां जहां भी छुपी हुई "इकोनोमिक एक्टिविटी" आर्थिक अनुमोदन समाया हों और जहां भी मेनेजमेन्ट प्योरली-प्रोफेशनल हो तो उसमंदिर में भी भगवान की भजन का सुखसम्भव नहीं है ।

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री बाल लाल के स्वस्म में जब थे तब से सत्संग का उत्तरोत्तर उत्थान किया ।आज अपने औरस पुत्र को अपने पीठस्थान पर नशीन किये है । इस सम्पूर्ण ६० वर्ष की "सत्संग यात्रा" में अनेक हरिभक्तों के घर पदार्पण करके सभी को सुखिया किया । उस समय यह सत्संग इतना फूला फला नहीं था । लोगों के पास इतना पैसा भी नहीं था । जिस गांव में पदार्पण करते उस गांव के अत्यंत गरीब के घर विना निमंत्रण के स्वयं पदार्पण करते थे । जोधा भरवाड के नेसडा में या सगराम भगत को कुबा में श्रीजी महाराज जैसे अकेले जाकर सुख देते थे और हरिभक्त कितना भाव विभोर हो जाते थे । यह सब सभी को याद हैं, ठीक यहीं स्थिति आज वर्तमान है ।

प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने इस परम्परा को जीवंत रखा है ।

आपके अनन्य पुरुषार्थ से ही देश में सत्संग फूला है । आपके चरणारविन्द से कितने हरिभक्त सुखिया हुए हैं । सतत पैंतीस वर्ष से हरिभक्तों के घर पदार्पण करके जिसके घर भगवान स्वामिनारायण के प्रसादी की वस्तु होती उसे ध्यान में रखते और उस प्रसादी की वस्तु को अव्यवस्थित हालत में हेखकर मन में पीडा होती । किसी के घर में चरणारविन्द दो टुकडे दिखाई दिये तो किसी के घर में कम्बल या शाल जो भगवान ने किसी कों दिया हो फटे हो गये हों, या वासन भी टूट फूट गये हो । इन सभी की दुर्दशा महाराज के हृदय को पीडा से झंकृत कर दिया और परिणाम स्वस्म आपने

अपनी निवृत्ति के बाद एक म्युजियम बनाने का संकल्प कर लिया । आज उसे साकारकरने के लिए वैज्ञानिक ढंग से अतिप्राचीन प्रसादी की वस्तु ओंका रखरखाव हो सके । और उसका सभी को दिव्य दर्शन का लाभ मिल सके इस हेतु से तथा वचनामृत का संदेश जनजन तक पहुंच सके पूर्व संकल्प को पूर्ण करके सार्थक किया है ।

इस शुभ संकल्प के पीछे दर्शन करनवाले का अन्तमें कल्याण तो होगा हीं यही एक मात्र भावना है । क्यों न हो ? जब प्रभु के प्रसादी का प्रत्यक्ष दर्शन होगा तो उस जीव का आत्यंतिक कल्याण होगा ही यह स्वयं श्री हरि का वचन है ।

एक हरिभक्त पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के पास आया और कहा कि आपने यह बडा अच्छा किया । निवृत्ति में से प्रवृत्ति का उत्तम यह मार्ग है । महाराजश्रीने कहा, "हमने निवृत्ति के लिए यह प्रवृत्ति स्वीकार नहीं किया है बल्कि इस शुभ प्रवृत्ति के लिए यह प्रवृत्ति स्वीकार किया है।"

प्रदर्शन म्युजियम का नक्शा तैयार हो गया है । जिसमें भगवान श्री स्वामिनारायण का हस्ताक्षर तथा सहीवाला पत्र भी म्युजियम में रखा जायेगा । यह प्लानिंगदेखकर इस प्रकार का आश्चर्यकारक म्युजियम एक मात्र एक ही होगा ।

अपने पिताके संकल्प को पूरा करने के लिए कटिबद्ध वर्तमान आचार्य महाराज श्री हैं । समग्र सम्प्रदाय के संत तथा हरि भक्तों के सहयोग से यह कार्य सम्भव है ।

फाल्गुन शुक्ल तृतीया ता. १३-३-०५ को भगवान श्री नरनारायणदेव के वार्षिक पाटोत्सव के शुभदिन सर्वावतारी श्री हरि के आठवें वंशज प.पू. लालजी महाराज श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री अपने कोमल कर कमलों द्वारा म्यूजियम का खात पूजन संपन्न किये ।

जहां श्रीहरि के स्पर्श की हुई वस्तुओं का सन्मान हो, उसके रख रखाव के लिये वैज्ञानिक सुरक्षा हो । आनेवाले प्रत्येक हरिभक्तो के कल्याण की जहां भावना हो, ऐसे म्युजीयम की पूर्णता में कोई संशय रहता ही नहीं है ।

श्री स्वामिनारायण द्विशताब्दि महोत्सव से लेकर षष्ठिपूर्ति महोत्सव तक बडे-बडे उत्सव किये गये । इन सभी को श्रीजी महाराज ने ही पूर्ण किया । म्युजियम के इस संकल्प को भी श्रीजी महाराज पूर्ण करेंगे । "यह केवल पूज्यश्री तेजेन्त्रप्रसादजी महाराज श्री या वर्तमान महाराजश्री अपने लिये नहीं कर रहे हैं, बल्कि समग्र संप्रदाय तथा सत्संग के लिए यह अद्वितीय संग्रहस्थान बन सके । जिससे सत्संग की शोभा ही बढेगी । इतने बडे कार्य को सम्पन्न करने के लिए पूज्य महाराजश्रीने कभी किसी के आगे झोली नहीं फैलाये, केवल नरनारायण देव को प्रार्थना किये कि "यह आपका ही कार्य है आप को ही पूर्ण करना है ।

संवत १८७८ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन श्रीजी महाराजने गढडा में तीन-तीन सभा किये, तीसरी सभामें आधी रात को साधुओं के निवास स्थान पर गये और ज्ञानप्रद वचन बोले जो जानने योग्य है ।

".....हम भी श्री नरनारायणदेव का मंदिर श्री अहमदाबाद नगर में बनाना चाहते हैं । दूसरा भी बनाना है लेकिन श्रद्धा के विना कीसी को कहना नहीं है । श्री नरनारायणदेव की इच्छा होगी तो होगा । नहीं इच्छा होगी तो नहीं होगा । लेकिन अपने में कोई कलेश न हो यह ध्यान रखना है । जब जन्माष्टमी का उत्सव आयेगा तब श्री नरनारायणदेव की इच्छा से हजारों-लांखों रुपये से उत्सव होगा, नहीं तो तुलसीपत्र से भी उत्सव होगा । होगा तो सही । लेकिन किसी से आग्रह नहीं करना । श्री नरनारायण देव को कोई गांव, जमीन, गाडी, अपनी इच्छा से दे तो स्वीकार करलेना है लेकिन बलात्कार से प्रेरित नहीं करना (ग.म.२१).

कितनी सुन्दर व्यवस्था श्री हरिने किया है । श्री हरिने अनेक उत्सव अनेक मंदिरों के निर्माण का संकल्प किया और हरिभक्तोंने यह कार्य अपना मानकर पूरा किया था । महाराज ने कहा गढडा में मंदिर बनाना है, तो तुरन्त हरिभक्त खडे हो

कर कहने लगे महाराज ? आज से यह बैलगाडी और दो मेरे साथी मंदिर की सेवार्थ कृष्णार्पण है। उस समय जिन्हे जो योग्य था वह सेवा किये। तुलसी जैसा विप्र अभागी था जिसे महाराजने सामने से जाकर मनोरथ सिद्धि किये थे। तो भी बह गल्ला तल्ला किया था।

आग्रह विना का एक अनोखा संकल्प पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजका है। भगवान का भजन करना भक्त का धर्म है, परंतु वचनामृत में श्रीजी महाराज ने ऐसा कहा था कि जो भगवान का या भगवान के भक्त का प्रवृत्तिमार्ग में लगना भी भक्ति है।" (व.१७)

श्री भगवान कृष्णने कानी उंगली से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया था। तब ग्वालों ने लकडी से सहकार दिया था। उन सभी को ऐसा हुआ कि हमारे लकडियों के सहयोग से ही गोवर्धन पर्वत खडा रहा। इतने में श्री कृष्ण ने थोडी अंगुली को ढीली करदी और पर्वत डोलने लगा। ग्वालबाल चिल्लाने चलगे। अरे कन्हैया तुम्हारि अंगुली छोडूगा नहीं। अन्यथा हम लोंग दब जायेंगे।

संग्रह स्थान की पूर्णता के लिये फूल नहीं तो फूल की पंखुडी देकर अपनी जीवन की चरितार्थता करें।

आनेवाला सत्संगजनरेशन के लिए ऐसे भव्य संग्रह स्थान योजित करके श्रीजी महाराज की महिमा को जीवंत रखना हैं। जो कोई योगदान सम्भव हो वह करना चाहिए। भक्ति करने का इससे अलग दूसरा कोई प्रवृत्ति मार्ग नहीं है। श्रीजी महाराज तो संकल्प पूर्ण हो इसके लिये पहले ही अपनी अंगुली उपर कर दी है। अबहमें तो केवल सहयोग ही करना है।

निवृत्ति में प्रवृत्ति

समग्र सत्संग जानता है कि अपने निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने निवृत्तिकाल में सम्पूर्ण समय अपने शुभ संकल्प के समान संप्रदाय का अद्वितीय आयोजन "श्री स्वामिनारायण म्यूजियम" (नूतन निर्माणाधीन) के निर्माण तथा संचालन में व्यस्त रहेंगे। यह आयोजन जल्दी से प्रगति के मार्ग पर है।

जिससे अब प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के स्थल पर अपनी आफिस में विराजमान होंगे। प्रात : ९-०० से ११-०० बजे तक वहाँ ही दर्शन करने का लाभ मिल सकता है।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
टर्फ स्कूल के सामने, ए.इ.सी. नारायणपुरा के पीछे,
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ टीले फेक्स : २७४९९५९७

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान अहमदाबाद की मालिकी का

श्री सहजानंद गुरुकुळ असारवा में प्रवेश हेतु

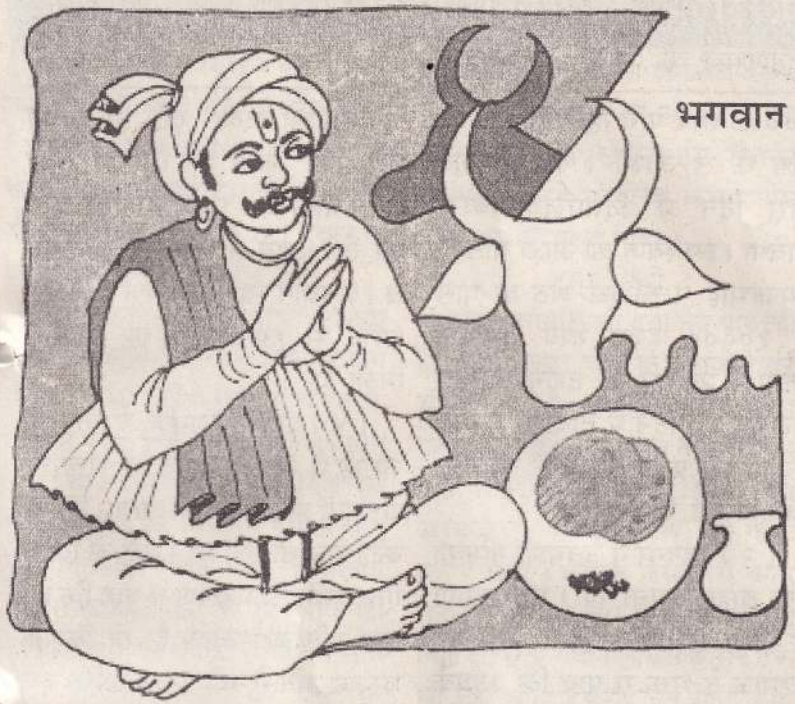
अहमदाबाद मंदिर की तरफ से अपने आचार्य महाराजश्री का प्राचीन निवास स्थान जो श्रीजी महाराज के चरणों से अंकित है ऐसी प्रसादी की भूमि पर श्री स्वामिनारायण वाड़ी असारवा गुरुकुल में कक्षा १ से १० तक अपनी शाला में अभ्यास हेतु प्रवेश दिया जाता है। कक्षा ५ से १० तक रहने खाने की सुन्दर व्यवस्था शिक्षण के साथ उपलब्ध है। संस्कार का सिंचन उत्तम ढंग से किया जाता है। जिससे SSC बोर्ड की परीक्षा में बालक के अच्छे प्रतिशत से उत्तीर्ण होते हैं। प्रतिशत के अनुसार सभी को पोसाय इतनी ही फीस लेकर एडमीशन दिया जाता है। सर्वप्रथम आप अपने बालक का एडमीशन करा सकते हैं।

ली. संचालकश्री श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा अम. १६

लेखों के लिए सूचना

बहुत ऐसे सम्मानित लेखलिखने वाले हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण लेख लिखते हैं वे धन्यवाद के पात्र हैं। किन्तु कुछ ऐसे लेखक हैं जो दूसरे के लेख को उतार कर भेज देते हैं। कितने के लेख एक जैसे होते हैं यहाँ भी भेंजते हैं दूसरी जगह भी भेंजते हैं। यह योग्य नहीं है। इसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखकों का होता है। इसलिए उपरोक्त सूचना को ध्यान में रखकर लेख भेंजे। लेख.झेरोक्ष नकल स्वीकार नहीं किया जायेगा।

- तंत्रीश्री



सत्संग सुरभि

भगवान भजने के लिए स्वाद क्या ?

- अतुल पोथीवाला

गीर के जंगल में नाजाधराई नामक छोटे गाँव में जोधा भरवाड अपनी पत्नी तथा भेंडा, बकरा के साथ छोटी सी कुटिया में रहता था ।

एकदिन जोधा कूंए में से पानी निकाल कर बकराओं को पानी पिला रहा था, उसी समय श्रीजी महाराज दश-वीस काठी दरबारों के साथ आ पहुँचे । इस प्यासी घोडी को पानी पिलाओगे क्या ? सोमला खाचर ने पूछा । क्यों नही पिलायेंगे जोधाने कहा । इतना कहकर जोधाने २-४ बल्टी पानी निकालकर सभी को पिलाया और पूछा कि आप सभी इधर कहाँ जा रहे हो । उत्तर में कहा गया कि बडताल उत्सव में जा रहे हैं। जोधाने पुनः पूछा यह कौन है ? ये स्वामिनारायण भगवान हैं। सामला खाचर ने कहा । यह सुनकर जोधा अपने भगवान ऐसा कहते हुए दौड़कर महाप्रभु के चरणों में गिरपड़ा और बोला । महाराज ! महाराज ! आप अपने साथ ही हमें रखिये । आप अपना मानकर हमारे ऊपर कृपा कीजिए । जोधा की बाँह पकड लीजिये, आप को मेरी कसम हैं । भोला जोधा की मधुर वाणी सुनकर श्रीहरि प्रसन्न हो गये । और कहने लगे कि हम सभी आज बडताल जा रहे हैं । जब वहाँ से लोटेंगे तो तुम्हे साथ ले जायेंगे और गढड़ा में दादा खाचर की भैंस चराना । इतना कहकर माणकी को नचाते हुए मायाधीश वहाँ से चल दिये । काठी दरबारों के घोडे क्रमशः पीछे हो लिये ।

जोधा भगवान को फाटी आंखो से देखता रहा । महाराज जहाँ तक दिखाई दिये वहाँ तक कमरपर हाथ रखे जोधा देखता रहा । जब आँखो से ओझल हो गये तब बोला, चित चोर चितचुरा के चले गये ।

बे मन जोधा बकरा लेकर घर वापस आया और अपनी पत्नी से स्पष्ट कह दिया कि - ये गायें, ये बकरे, यह घरबखरी सब कुछ तुम देखना अब तो मैं चला स्वामी के गढडा । स्वामी के साथ महाराज को मिलने की यह उतावलपना ग्वालिन तो देखती ही रही ।

धन तेरस का दिन था । महाराजने विधिसर गायों का पूजन किया । जोधा आकर हाथ जोडकर खड़ा हो गया । महाराजने सभी गायों का धन जोधा के ऊपर सौप दिया । दीपावली का दिन आया । घर-घर आसो पालव - तोरण - वंदनवार से घर सजादिये गये । चन्दन के सुगन्ध से सारावातावरण गम गम हो गया । प्रत्येक चौक को ईन्द्रवरणा की रंगोली से सजा दिया गया । प्रत्येक घर दीपमालाओं से जगमगा उठे ।

इसी समय महाराज भगुजी के साथ तथा कुछ काठी राजाओं के साथ माणकी ऊपर सवार होकर जोधा

अनुसंधान पृष्ठ १७ पर

भक्तवत्सल भगवान श्री स्वामिनारायण

- दिनेशभाई के. भगत (अमदावाद)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपनी उपस्थिति में ही स्त्री धन का त्याग, पंच वर्तमान पालना, निर्लोभी, नि:स्वार्थी, निर्मानी, अष्ट प्रकार के ब्रह्मचर्य का पालन, शिक्षापत्री के अनुसार बर्तन करनेवाले २००० से भी अधिक साधुओं को बनाया था । ५०० परमहंस संप्रदाय के रत्न जैसे थे । उनके कितने गृहस्थ भी संत जैसा व्यवहार करके भगवान श्री स्वामिनारायण के आत्मीय बने थे । आत्मानंद का अनुभव करते थे । भगवान स्वामिनारायण के समय में करीब पांच लाख सत्संगियोंके प्रमुख थे । प.पू. आधारानंद स्वामी ने "हरिचरित्रामृत सागर" में बताया है कि महाराज के समय में १९२९ साधु, २४ ब्रह्मचारी, १६ सन्यासी थे । लेकिन यह संख्या पूरी नहीं है । यह ग्रन्थकारके कहने का अभिप्राय हैं । कवि दलपतराम ने "श्री पुरोत्सव" में उपरोक्त वचनों को प्रभाबित किया है। एकभक्त कविने भी लिखा है कि "लेखेंची मन लखना, ते तो निश्चय ईश्वर होय छे." भगवान स्वामिनारायण भी अपने भक्तों के मनोरथ को पूर्ण किये हैं । इसका दृष्टांत यहां देते हैं -

(१)सौराष्ट्र के श्री रामजीभाई भगवान के अनन्य भक्त थे । भगवान स्वामिनारायण ने उन्हे स्वप्न में दर्शन दिया कि जो आप वणिक के पास १०००० रुपये मांग रहे हैं उसे तत्काल मांग के ले आओ । नहीं तो शेठ वीस दिन में दिवालिया बोल जायेगा । इस स्वप्न को आज्ञा मानकर रामजीभाई ने वणिक शेठ के पास से १०००० हजार रुपयें वापसले लिया । महाराज के दर्शन अनुसार शेठ का २० दिन में दीवाला निकल गया । इस प्रकार भक्त के लौकिक व्यवहार की रक्षा की ।

(२)वडनगर में उत्तमशी नामका एक ब्राह्मण भक्त था । वह डभाण में श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ आया । महाराज ने भक्त से पूछा कि आपके पास कितने रुपये हैं । भक्तराजने कहा मेरे पास ५०० रूपयें हैं । जो वालिवा शेठ के घर रखकर आया हूं। महाराज ने कहा वेह रुपये मुझे देंगे ? महाराज ने कहा वालिया शेठ के यहां से ५०० रुपये लेकर घर ही जाना; ऐसा ही किया वडनगर जाकर वणिक के पास से रुपये लिये और घर गये; बाद में महाराज को देने डभाण आये । महाराज ने कहा हमें रुपये नहीं चाहिए । हम तो पाणिया शेठ का दश दिन में दिवाला होनेवाला था जिसके लिए आपको कहा था और आपकी रक्षा हुई; आपका पांच सौ रुपया बच गया । धन्य है ऐसे भक्त वत्सल भगवान ।

(३)विसनगर में पानाचंद भावसार श्रीजी महाराज का नित्य ध्यान भजन करते थे । ऐसा करते रहने से उन्हे दिव्य दृष्टि मिल गयी थी; फल स्वरुप घर बैठे धाम का दर्शन करते थे । भगवान अपने भक्त को लेने आते तो उसे भी वे देखते थे । भगवान स्वामिनारायण के भजन भक्ति से इस प्रकार का सामर्थ्य मिला था ।

(४)श्रीजी महाराज गुजरात में जा रहे थे उनके साथ काठी भक्त भी थे; साम हुई, एक गांव आया, जिसमें कोई सत्संगी नहीं था । वहां के किसी एक व्यक्ति से महाराज ने पूछा कि हमें एक रात्रि यहाँ रुकना है; तो किसके घर हम रात्रि में रुके ? वह व्यक्ति एक पटेल का घर बताया और कहा कि वह बडा सेवा भावी है, भक्त है ? महाराज उसके घर गये । पटेल ने स्वागत करके रात्रि रहने की व्यवस्था कर दी । घोडे के लिए घास की व्यवस्था कर दी, भोजनकी व्यवस्था की । प्रात:काल महाराज घुडसवारी करके तैयार हुए; उस समय महाराज ने गांव के लोगों को कहा कि पटेल ने उत्तम व्यवस्था की ।

सभी ने कहा कि पटेल बहुत अच्छा है । लेकिन संतान नहीं है । महाराज ने कहा सन्तान होगी । पटेल पति पत्नी अवस्थावाले थे; फिर भी महाराज के वचन से संतान प्राप्ति हुई ।

(५)गढपुर में बेचरभाई देरासरी को कालरा हुआ था । उसकी तबीयत देखने के लिए महाराज पधारे । उनके यहां आने के साथ ही एक बहन ने

कहा कि देरासरी की पत्नी मर गयी । महाराज ने कहा मनुष्य की देह तुरंत पडती नहीं है । ऐसा कहकर महाराज घर में गये और कहे कि माखन लाओ । भक्तराज माखन लाये । महाराज, मृत बहन के मुख में माखन डालें और वह बहन आंखे खोल कर बैठ गयी । बहन महाराज के पैर पर गिरकर प्रणाम की । इस प्रकार भगवान ने देरासरी की पत्नी को जीवनदान किया ।

(६) गढडा में खीमा सुथार बहुत बिमार थे । उन्हे देखने महाराज घर गये । उन्हे देखकर महाराज दादा खाचर के दरबार में गये जीवु बा से कहे कि खीमा सुथार अब नहीं बचेगा । उसकी दो पत्नीयां हैं वे विधवा हो जायेंगी । जीवुबा ने कहा मारना और जिलाना आपके हाथ में हैं । महाराज ने उन्हे जिलाया मरने नहीं दिया ।

इस प्रकार भगवान भक्त की रक्षा करते हैं । श्रद्धा विश्वास होना चाहिए । वर्तमान काल में भी तो पूर्णिमा के दिन जेतलपुर रेवती बलदेव, श्री हरि कृष्ण महाराज तथा कालूपुर मंदिरमें श्री नरनारायण देव का दर्शन मनो कामना पूर्ति के लिए करते हैं । उनकी मनो कामना आज कलियुग में भी पूर्ण होती है । श्रद्धा होनी चाहिए ।

अनुसंधान पृष्ठ १५ से

सत्संग सुरभि : भगवान भजने के लिए स्वाद क्या ?

के गौ-शाला की तरफ गये । महाराज को देखकर जोधा तो पागल जैसे हो गया ।

कुछ दिन हो गये जोधा महाराज को आकर कहा अब आप की भैंसो को हम चराने नहीं जायेंगे । क्यों क्या हुआ ? महाराजने पूछा । क्यों क्या ? बड़े मन वाली बडीबा (लाडूबा) तो प्रतिदिन मीठा-मीठा खिलाती हैं । घी, खाभा का दूध ये सभी देती हैं । हम इन सभी के लिए आये हैं ? मैंने बडीबा को कह दिया ।

क्या कहदिया ? देखो बडीबा, मुझे तो मोटी रोटी, अंचार, द्रोणी भरके छाछ आप देंगी तो ही हम भैंस चराने जायेंगे । फिर ऐसा यदि की तो हम भैंस चराने नहीं जायेंगे । यह आप भी कह दीजिएगा ।

भगवान भजने वाले को स्वाद क्या ?

जोधा का निःस्वादी, निर्वाणी, घर कुटुंब छोड़कर निर्मोही इत्यादि सब देखक प्रभु अत्यंत प्रसन्न हो गये । बोले "वाह जोधा वाह ? तूं मेरा सच्चा व्रजवासी गोप । इस में क्या महाराज ? हम तो यहाँ मान पान के लिए नहीं आये हैं, हम तो आपको पाने आये हैं । आपका सायं प्रातः दर्शन हो तो भूख प्यास, नींद सभी चली जाती है । आपके चरण में केवल रोटी और पानी भी मिले तो वस है, इतने में जोधा जग जीत लेगा ।

एक अनपढ, अज्ञानी ऐसा जोधा भरवाड की बात सुनकर श्रीहरि अति प्रसन्न हुए । श्रुति स्मृति का सम्पूर्ण अवलोडन करने के वाद भी यह समझ लोगो में नही आती वह सब जोधा के मुख से सुने और महाराज खड़े होकर जोधा को गले लगा लिये ।

धन्य है जोधा भरवाड और धन्य है उसकी समझ ।

श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला जेतलपुर में प्रवेश लेने हेतु-

२००५ जू. मास से नया सत्र प्रारंभ हो रहा है, जिसमे प्रवेश चाहनेवाले प्रवेश पत्र प्राप्त करके परिणाम की जेरोक्ष नकल साथ में लगाकर संचालक श्री, श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला जेतलपुर ता.दश्क्रोई, जि. अहमदाबाद के पते पर ता. २५.५.०५ तक भेजना होगा । आवेदन पत्र मिलने के बाद ता. ५-६-०५ रविवार को इन्टरव्यू लिया जायेगा ।

प्रवेश की पात्रता सरकार मान्य विद्यालय से कक्षा ७ पास होना चाहिए । केलव कक्षा ८ में ही प्रवेश ले सकते हैं । इसके अलावा अन्यकक्षा में फोर्म न भरें । सरकार मान्य किसी भी पाठशाला से किसी भी कक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी प्रवेशार्ह है ।

प्रवेशावेदन पत्र प्राप्ति स्थल -

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालूपुर, अहमदाबाद (कोठार-आफिस)
२. श्री स्वामिनारायण मंदर, जेतलपुर, ता. दशक्रोई, जि. अहमदाबाद-३८२४२६
३. संपर्क तथा सम्पूर्ण जानकारी के लिए

संचालक श्री, श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला,
मु.जेतलपुर, ता.दश्क्रोई, जि. अहमदाबाद.

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

यह कैसी कसौटी ?

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

कार्यक्रम का नाम है : बुद्धि की कसौटी में जिस विद्यार्थी को भाग लेना हो वह ले सकता है । इस कसौटी में केवल एक ही प्रश्न पूछा जायेगा । इसका उत्तर हां और ना में देना है । पैंसठ मार्क की कसौटी है । क्रमशः सभी को उत्तर देना है । सभी से एक समान प्रश्न पूछा जायेगा । सभी तैयार हो जाओ साहब आ गये हैं ।

बडे हाल में साहब बैंठे हैं, उनके बगल में पचास किलों ग्राम रखा हुआ है । सभी क्रम से आने लगे सभी से प्रश्न पूछा जाने लगा, उसी में ऐके छात्र से पूछा गया कि भाई? इस पचास किलो को उठा सकता है या नहीं, उसने ''हां'' कह दिया । उस विद्यार्थी को पैंसठ मार्क मिल गया । बजन को उठाना तो था नहीं, केवल उत्तर ही देना था । बाद में दूसरे का नम्बर आया, तीसरे का आया क्रमशः सभी से प्रश्न पूछा गया । लेकिन जिसने हां कहा उसे पैंसठ नम्बर मिले ।

मित्रो नई बात तो यह है कि कितने छात्रों ने तुरंत 'ना' में उत्तर दिया । परिणाम तो आप सभी को ख्याल आ गया होगा । अनुत्तीर्ण भी हो गये होंगे, लेकिन ऐसा नहीं हैं कितने को पैंतीस मार्क मिले हैं । इससे कसौटी पूरी नहीं होती बल्कि अंक का विभाग बाकी हैं ।

इसकसौटी में भाग लेनेवाले कितने ऐसे विद्यार्थी थे कि जो "हां" या 'ना' दोनो ही नहीं बोले थे । वे बीच का उत्तर दिये थे कि उठा भी सकता हूं और नहीं भी । ऐसे विद्यार्थियोंको कितना उत्तर में मार्क मिला होगा ? आप जानते हैं । यह तो विशिष्ट कसौटी कही जायेगी । यही कसौटी की खूबी है । इसका रहस्य सुनो ? - इस कसौटी में बजन उठाना तो था ही नहीं । "हां " या "ना" में उत्तर देना था । इसमें जो "हां" में उत्तर दिया वह प्रथम में पास हुआ । जिसने "ना" में उत्तर दिया उसे तृतीय में पास किया गया । जो मध्य उत्तर दिया वह अनुत्तीर्ण हुआ ।यहां तो बल की जरूरत नहीं बल्कि बुद्धिबल की जरूरत है ।

जिंदगी में सुखी होना हें, किसी भी कार्य में सफल होना हैं तो दृढ प्रतिज्ञा होना चाहिए । व्यावहारिक कार्य हो या सामाजिक कार्य हो, वैज्ञानिक हो या धार्मिक हों दृढता के विना कभी भी कार्य सफल सम्भव नहीं है । भगवान भी ऐसे ही भक्त की प्रार्थना सुनते हैं, उसी की मदद करते हैं, इसीलिए तो अपने ब्रह्मानंद स्वामी ने भी अपने कीर्तन में कहा है ।

जो होय हिंमत रे नरने उरमांहि भारी,
दृढता जोई ने मदद करे मुरारी ।
ठीक तजी ने रे नित्य हिंमत संतो बोले ।

भगवान भी भक्त की परीक्षा लेने के लिए बार-बार कसौटी करते रहते हैं । इसलिए सावधान होकर दृढ मन से कार्य की तरफ बढोगे तो निश्चित भगवान प्रसन्नहोंगे और कार्य में सफलता मिलेगी ।

दंभ कहां तक चल सकता हें ?

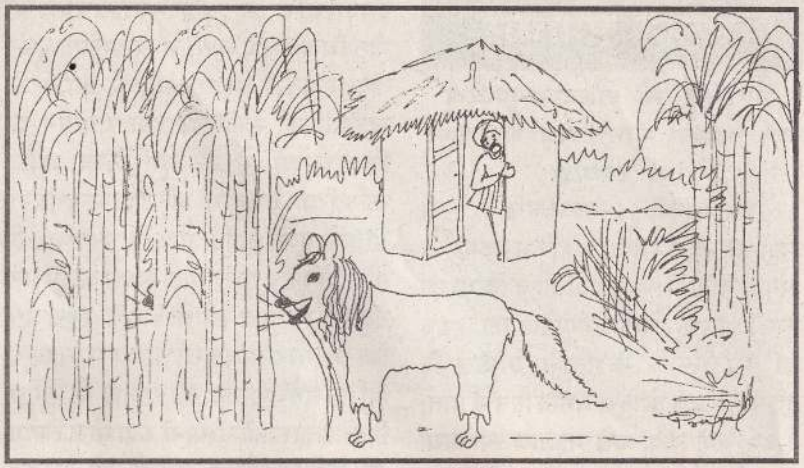
- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक जंगल था। जंगल के अगल बगल के विस्तारमें किसान खेती करते । जंगल नजदीक होने से किसानों को जंगली हिंसक प्राणियों की डर लगी रहती । विशेष तो शियार से रहती क्यों कि गन्ना की खेती के परम शत्रु शियार होते हैं । किसान रात दिन खेतकी रखवाली करते । गन्ने के खेत में यदि शियार घुस जांय तो गन्ने कों ऐसे चूस जाते है कि वह गन्ना सड ही जाता है । इसलिए रातदिन जगकर उन्हे भगाने का प्रयास करते रहते हैं ।

उसमें से एक शियार को विचार आया कि किसान हमें देखकर लकडी लेकर दौडते हैं या पत्थर मारते हैं, लेकिन सिंह को देखकर भागते हैं या

घवडाते हैं, छिपजाते हैं । सिंह कितना प्रबल प्राणी हैं । एक ही झपट में अपनापेट भरलेता है । सिंह किसी से डरता नहीं है । इसी तरह हमें भी बनना पडेगा । लेकिन सिंह बनें कैसे ? सिंह बनजांउ तो दूर से देखकर लोग सामने नहीं आयेंगे । इतने में उसे मरे हुए सिंह का चमडा दिखाई दिया और उसे पहन लिया । अब तो वह सिंह जैसा लगने लगा । मुझे अब कोई देखेगा तो भाग जायेगा । अब हम शांति से गन्ने को खा सकते हैं । इतना ही नहीं कितने प्राणी तो उसे देखकर डरने भी लगे । इससे वह अपने को सिंह ही मान लिया । वह शियार सिंह की खाल ओढकर गन्ने के खेत में प्रवेश किया, उसे देखकर किसान घबडाकर भागा और झोपडी में जाकर छिप गया । इधर शियार गन्ने का आनंद लेने लगा । लेकिन किसान झोंपडी में से बाहर आकर देखा तो वह गन्ना खा रहा था । उसे बडा आश्चर्य हुआ कि शेर तो गन्ना खाता नहीं है ।

मित्रो । वह किसान समझ गया कि गन्ना खाने वाला शियार हो ही नहीं सकता । इसी प्रकार जो देह का दास हो वह भक्त नहीं हो सकता, बाद में उस किसान ने हाथमें लकडी लिया और मार मार के उसे खेतसे भगा दिया । शियार मार खाने से अपनी वर्जनल आवाज करते हुए भाग गया । बाद में वह शियार वहुत पश्चाताप किया कि गन्ना तो खाने



को नहीं मिला बल्कि रोजसे अधिक मार खानी पडी । सिंह की खाल ओढने से कोई सिंह नहीं हो जाता है । सिंहनी के पेट से पैदा होना ही पडता है । बाद में उसे गन्ना खाना नहीं पडता और मार भी नहीं । सिंह भूखे मरजायेगा लेकिन घास नहीं खाता । इसी प्रकार भक्त के स्वस्म को धारण करने से कोई भक्त नहीं होता, विषयों की तरफ जाने वाली वृत्ति को रोकना पडता है । तप, संयम, आराधना के बिना खाली भक्त के वेश में भक्ति संभव नहीं । भक्ति का आनंद भी प्राप्त नहीं कर सकता हैं । परम सिद्धि की प्राप्ति भी नहीं हो सकती है ।

पोस्ट किया हुआ अंक वापस आने के संदर्भ में

देश विदेश में श्री स्वामिनारायण मासिक के हजारों वांचक है । प्रतिमास की ११ ता. को अहमदाबाद के P.S.O. रेलवे स्टेशन कालुपुर से सभी अंक एक ही साथ मेईल किया गया था । अहमदाबाद सीटी पीन कोड के अनुसार गुजरात के प्रत्येक जिले में आऊट स्टेट अलग सोर्टिंग करके पोस्ट किया गया था । विदेश के अंक भी फ्रेंकिंग करके उसी दिन पोस्ट किया जाता है । (गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी) फिर भी कितने सभ्यों का मासिक अंक वापस आ जाता है । इस लिये जो भी सभ्य अपना निवास स्थान या पता बदल दिये हों, वे सभ्य नं. के साथ अपना पूर्ण पता पत्र द्वारा या फोन द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें ।

विदेश के सभ्यों को अंक के प्रथम पेज पर इ-मेईल नं. दिया गया है । उस पर अपना ग्राहक नं. के साथ नया पता अवश्य सूचित करें । आप इसके लिये थोड़ा नियमित होंगे तो कार्यालय के कार्य में सरलता होगी । कार्यालय को काम लोड़ नहीं पडेगा । हमारी सूचना यदि आप को योग्य लगी हो तो आप अपने पड़ोशी को या अपने रिश्तेदार को या संबन्धी को जिसनें अपने स्थल परिवर्तन किया हो तो इस कार्य में आप जरुर मदद करें जिससे उन्हें भी इसका लाभ मिले और संस्था का नुकशान न हो यह सभी के सेवाका कार्य है ।

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८३वां पाटोत्सव धामधूम से सम्पन्न

सर्वावतारी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान ने जिस स्वस्त्र को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया था ऐसे महाप्रभु नरनारायणदेव का १८३ वां पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल ३ ता. १३.३.०५ के शुभ मंगल दिन में प्रातः ६.३० बजे प.पू. बडे महाराज श्री तथा प.पू. वर्तमान महाराज श्री तथा लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. ध.धु.आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव अभिषेक षोडशोपचार विधि से सम्पन्न किया गया। इस प्रसंग पर दर्शनार्थ देश विदेश से हजारों हरिभक्त आये हुए थे। प्रासंगिक सभा में पू. महंत स्वामी, पू. पुस्त्रोत्तम प्रकाश दासजी स्वामी, तथा वडताल के शास्त्री स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी ने प्रसंगोचित उद्‌बोधन किया। समस्त सभाको दोनों आचार्यो ने हार्दिक आशीर्वाद दिया। पाटोत्सव के यजमान प.भ. विठ्ठलभाई खोडीदास मनसुखभाई तथा नारायणभाइ डाभी (गढडावाला) समस्त परिवारजन ने आचार्य महाराज श्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। इस प्रसंग पर अन्नकूट की सेवा में मूली से शा. उत्तमप्रयदासजी स्वा. ब्रह्मविहारीदास, शा. सत्यप्रकाशदास, मुक्तजीवनदास, शा. गोलोकविहारी-दासजी तथा रसिकभगत आदि ने सुन्दर सेवा की थी।

- कोठारी धर्मप्रकाशदास

कांकरिया रामबाग मंदिर में बालस्वरुप कष्टभंजन देव का पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोज

प.पू. बडे महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के दिव्यचरणों से अंकित दिव्य भूमि कांकरिया रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिरमें पूज्य आदि आचार्य महाराज श्री ने अपने कुल देवता बाल स्वस्त्र कष्टभंजन देव की स्थापना की थी। उन्ही कष्टभंजन देव का पाटोत्सव तथा श्रीजी महाराज ने श्री नरनारायण देव की प्रतिष्ठा के समय जिस प्रकार कांकरिया में ब्रह्मभोज किया था जिसमें लाखों भूदेवों को भोजन कराकर तथा दक्षिणा प्रदान करके सभी को तृप्त किया था। उसी प्रकार इस पवित्र भूमि पर एक साथ दो पवित्र उत्सव सम्पन्न हुआ था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरदहाथों से कष्टभंजन देव का षोडशोपचार विधिसे अभिषेक किया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री के शुभ सानिध्य में आयोजित प्रांगिक सभा में अपने सभी मंदिर के महंत तथा भूदेवों ने अपनी भावना व्यक्त की थी। अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री, प.पू.लालजी महाराजश्री तथा अ.सौ.प.पू. गादीवाला श्री पधारकर दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिया था। वयोवृद्ध स.गु. शा.स्वा. हरिगोविंददासजी तथा स.गु. माधवप्रसाददासजी की प्रसन्नतासे महंत स्वा. गुस्त्रसाद दासजी तथा महंत स्वा. देवकृष्णदासजी ने सुन्दर आयोजन किया था।

मुख्य यजमान का लाभ शेठ श्री भरतभाई, प.भ. भवानीभाई, प.भ. हरिकिशनभाई पीतांबरदास ठक्कर तथा प.भ. जिगरभाई दीपकभाई पटेल (कुबडथल), प.भ. गोविंदभाई चतुरभाई पटेल (दूधवाला) ने लिया था। हजारों भूदेव इस प्रसंग पर ब्रह्मभोज में सामिल हुए थे। जेतलपुर संस्कृत पाठशाला से विद्यार्थी संत, भूदेव इत्यादि पधारे हुए थे। भोजन की समग्र व्यवस्था नरोत्तम भगत ने की थी।- *कोठारी आनंदस्वामी*

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.आचार्यश्री १००८ कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर से श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग पिछले कई वर्षो से धार्मिक परीक्षा द्वारा युवा पीढो को धार्मिकसंस्कारका सिंचन कर रहा है। श्री नरनारायणदेव, अहमदाबाद, मूली, भुज (कच्छ) में विविध केन्द्रो पर परीक्षा का आयोजन कियाजाता है।

विगत वर्ष १९.१२.०४ को ली गयी परीक्षा में कुल ३१ केन्द्रोंसे २०७५ विद्यार्थीने फार्म भरे थे, जिसमें से १६९३ परीक्षा दिये थे। उस में से १४४३ उत्तीर्ण हुए थे। २५० अनुत्तीर्ण हुए थे। ३८२ अनुपस्थित थे।

बाल सत्संग-१ : काकडिया विशाल वालजीभाई, १०० % (असारवा), सावेज राकेश मधुभाई ९९ % असारवा गुरुकुल, पटेल हिरेन लालजीभाई, ९९ % धांगध्रा गुरुकुल, मीखडिया परसोतमभाई नटुभाई, ९९ % ध्रागंध्रा गुरुकुल.

किशोर सत्संग-२: राद्‌डिया भवदीप भरतभाई, १०० % एप्रोच मंदिर, कोठिया नवलकुमार हिंमतभाई, ९८ % मेघाणीनगर , पटेल नीरवकुमार दिनेशभाई, ९८ % तातानगर, भूमिकाबहन रसिकभाई, ९७.४ % लूणावाडा.

सत्संग परिचय-३ : पटेल अशोक

रमेशभाई, १०० % असारवा गुरुकुल, पटेल हिमांशु जगदीशभाई, ९८ % मेघाणीनगर, जोडिया भरतकुमार मथुरभाई, ९८ % असारवा गुरुकुल, करकर मनोजकुमार बाबूभाई, ९५ % एप्रोच मंदिर, ठुम्मर किशोरकुमार मुकेशभाई, ९५ % असारवा गुरुकुल.

सत्संग प्रविण-४ : देवाणी चिरायुकुमार प्रवीणभाई, ९९ % मेघाणीनगर, चौहाण अमीधर कांतिलाल, ९५ % असारवा गुरुकुल, असलालिया कविनकुमार बाबूभाई, ९१ % असारवा गुरुकुल, पटेल रश्मिकुमार लालाभाई, ८५ % असारवा गुरुकुल, पटेल कल्पेशकुमार विष्णुभाई, ८३ % असारवा गुरुकुल।

सत्संग पारंगत-५ : पटेल जतीनकुमार परसोतमभाई, ९५ % मेघाणीनगर, प्रजापति गणपति कांतिलाल डांगरवा, शास्त्री मफतलाल सोमनाथ, ९१ % डांगरवा, शास्त्री रमेशभाई सोमनाथ, ९० % डांगरवा, परमार शंकरसिंह सुरजितसिंह, ९० %, डांगरवा।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उपरोक्त सभी विद्यार्थीयों के उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद देते हैं। प्रत्येक गांव के श्री न.ना.यु.मंडल को नया केन्द्र बनाने की आज्ञा भी करते हैं।

आगामी धार्मिक परीक्षा ता. १८-१२-०५ को ली जायेगी। - *संचालकश्री*

इडर में पू. महाराजश्री का उत्साहपूर्वक स्वागत

इडर प्रदेश का भाग्य खुल गया, गादी पर आने के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रथमबार ता.९.२.०५ को इडर पधारे थे। अंबिका जीन से बडी लंबी शोभा यात्रा निकाली गयी। हजारों भक्तों ने तथा संतो ने इस यात्रा में भाग लिया। इस यात्रा में नाना प्रकारसे कृष्ण, राम, शिव, हनुमान इत्यादि का स्म बनाकर अलंकृत किया गया था। स्थमें बिराजमान पूज्य आचार्यमहाराजश्री तथा संतो के दर्शन से वहां की जनता धन्य हो गयी थी।

श्री गोपीनाथजी तथा श्री हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारकर पूज्य महाराजश्री सभामें पधारे थे। सभा में महोत्सव के मार्ग दर्शक जगदीश स्वामीने पूज्य महाराज श्री का स्वागत कर के धन्यता का अनुभव किया। वहां की जनता ने प.पू. महाराज श्री का भावपूर्वक स्वागत किया। कांतिभाई रेवाभाई पटेल परिवार ने पू. महाराजश्रीका ३२ फुट के हार से स्वागत करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

सभा संचालक शास्त्री हरिजीवन दासजीने किया (गांधीनगर) तथा साबरकांठाके सत्संग निष्ठा की बात की। संतो ने प्रासंगिक प्रवचन किया। अहमदाबाद, हिंमतनगर, टोरडा, मूली, लालोडा, सापावाडा, महुन्द्रा, इत्यादि स्थलों से संत पधारे हुए थे। पू. महाराजश्री ने खूब प्रेरणादायी आशीर्वाद दिया। इडर के महंत स्वामी ने निष्ठा रखने पर बल तिया। आभारविधि डाह्याभाई (नेत्रामली) ने की। हजारों हरिभक्तों ने प्रसाद लिया था। - *साधु सत्यसंकल्पदास*

टोरडा मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

श्री स्वामिनारायण टोरडा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री की आज्ञा से ५२ वां पटोत्सव तथा गणपतिजी एवं हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न की गयी।

महंत स्वा. कृष्णप्रसाददासजी तथा शास्त्री स्वामी परमेश्वर दासजी के मार्गदर्शन में श्री गोपाललालजी श्री हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक तथा श्री हनुमानजी एवं गणपतिजी की प्राणप्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न की गयी।

इस प्रसंग पर त्रिदिवसात्मक हनुमत चरित्र कथा शा.स्वा. हरिजीवनदास के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई। पारायण के यजमान अ.नि.कान्ताबहन भोगीलाल सोनी तथा अ.नि. विद्यालक्ष्मीबहन (विंदू) कन्हैयालाल सोनी परिवार तथा मास्ति यज्ञ के यजमान प.भ. कांतिभाई जोइताराम पटेल परिवार तथा पाटोत्सव के यजमान प.भ. खीमजीभाई भगवानदास के परिवार ने लाभ लिया।

माघ शुक्ल ८ को प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती उतारकर तथा श्री गणपतिजी एवं हनुमानजी की प्रतिष्ठाकर स्वहाथों से यज्ञ की पूर्णाहुति में श्री फल का होम किया। यजमान हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराज श्री को हार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रासंगिक सभा में संत - हरिभक्तोंने प्रसंगोचित प्रवचन किया। सभा संचालन हिंमतनगर के महंत शा. आनंदजीवनदासजी ने किया। संत पार्षद मण्डल ने सुन्दर सेवा की थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर की प्रगति देखकर खूब प्रसन्न हुए।

- *शा. आनन्दजीवनदास*

सापावाडा मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

ईडर तालुका के श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा में विराजमान श्री धर्मदेव, भक्तिमाता, श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा श्रीघनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक फाल्गुन शुक्ल ५ ता. १४.३.०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभहाथों से वेद विधि से सम्प्न किया गया। गांव में प.पू. आचार्य महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। महंत स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी की प्रेरणासे प.भ. मोहनभाई करशनभाई पटेल परिवार ने यजमान पद का लाभ लिया था। अन्नकूट की आरती प.पू. आचार्य महाराज श्री ने उतारी। बाद में सभा में सभी

उपस्थित सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिया । सभा संचालन वासुदेव चरण ने किया । *- कांतिभाई पटेल*

नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

दहेगांव तालुका के श्री स्वामिनारायण मंदिरमें मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आयोजित किया गया । जिसके उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगी जीवन ग्रंथका पारायण शा.स्वा. सत्संग भूषणदासजी ने सुमधुर शैलीमें किया । विष्णुयाग का भी आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर पोथी यात्राके यजमान प.भ. मणीलाल नारणभाई पटेल (यू.एस.ए.), प.भ. राजेन्द्रभाई मणीलाल पटेल (अमेरिका) तथा प.भ.नीतीनभाई मणीलाल पटेल (हाल अमदाबाद) तथा विष्णुयाग के यजमान प.भ. शैलेषभाई कांतिभाई पटेल तथा प.भ.भद्रेशभाई कांतिभाई पटेल थे । इन सभी प्रसंगो के आयोजक स. गुरुपू. ध्यानीस्वामी हरिस्वरूप दासजी थे ।

मोडासा मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु.आचार्य महाराज श्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से मोडासा श्री स्वामिनारायण मंदिरमें ८ वां वार्षिकोत्सव महंत स.गु. शा.अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ ।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी की महापूजा अन्नकूट आदि कार्यक्रम हुआ । कोठारी कांतिभाई प्रजापति ने संतो का पूजन अर्चन किया । *- पा. नरेन्द्र भगत, मथुरा*

मेऊ श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री एवं वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.लालजी महाराज श्री की शुभ प्रेरणासे मेउ श्री स्वामिनारायण मंदिर में ११ वां पाटोत्सव तथा बहनों के मंदिर में पांचवा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया इस प्रसंग पर शाकोत्सव एवं समूह पूजा का आयोजन किया गया ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री यहां शोभायात्रामें पधारे उस समय आपका स्वागत पूजन यजमान श्री शंकरजी बलदेवजी झाला ने किया । हजारों हरिभक्त शोभायात्रा में भाग लिये । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा मंडपमें पधारे । वहां तपस्वी संत पु. श्यामचरण दासजी स्वामीने पूज्य महाराज श्री का पुष्पहार से स्वागत किया । शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी ने सभा संचालन किय। । कथा पारायण - शा. हरिजीवनदासजी ने किया । मुख्य यजमान श्री दशरथभाई डाह्यालाल भावसार, सहयजमान श्री रमेशभाई पी.भावसार तथा अन्य हरिभक्तों ने पू. महाराजश्री का पूजन करके आरती किये और दर्शन करके आशिर्वाद प्राप्त किये । अन्नकूट की सेवा में स्वा. नारायण स्वरूपदास (महंतश्री प्रयाग) तथा स्वा. नारायणप्रसादजी (महेसाणा) योगदान दिये थे ।

अंत में समस्त सभा को आचार्य महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । *- पू. सर्वेश्वरदासजी*

अरोडा जूना (ता. ईडर)

प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से ईडर मंदिर के महंत स्वा. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से शाकोत्सव तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । सभा में स्वा. हरिजीवनदासजी तथा स्वा. आनंदजीवनदासजी ने श्रीहरि की महिमा का गान किया । टोरडा महंतश्री तथा ईडर के महंतश्री ने ठाकुरजी की आरती उतारी थी । श्री मुकेशभाई, श्री हरिभाई, श्री नवीनभाई, कोठारीश्री, शेठश्री जेठाभाई तथा कचराभाई इत्यादि हरिभक्तों ने सेवा का लाभ लिया । *- सा.सत्यसंकल्पदास*

प्रांतिज श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी ने समूह महापूजा का आयोजन किया । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री पधारे थे । बाद में आरती उतारकर सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दिये थे । सभा में महंत स्वा. तथा ट्रस्टी मंडल ने महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी । सभा में हिंमतनगर के महंत स्वामी तथा संत मंडल ने प्रसंगानुरूप प्रवचन किया । अंत में सभी सभाजन को महाराज श्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया । प.भ. बाबूभाई शाह तथा प.भ. लालभाई पंडया आदि हरिभक्तों ने सेवा का लाभ लिया था । *- चेतन स्वामी, प्रांतिज*

नारणपुरा (ता. कडी) में पाटोत्सव पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा महंत शा. स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से यहाँ के दोनो मंदिरो का पाटोत्सव तथा अ.नि. स.गु. स्वामी हरिजीवनदासजी के स्मरणार्थे ता. २५-३-०५ से ३-३-०५ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । संहिता पाठ में स.गु. स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी थे ।

ता. ३-३-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस गाँव में पधारे उस समय धूमधाम से स्वागत किया गया । प.पू. महाराजश्री ने सर्व प्रथम मंदिर में पधारकर ठाकुरजी के अन्नकूट-पाटोत्सव की आरती की । पश्चात् सभा में कथा की पूर्णाहुति की । सभा में संत-हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्जन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री का संकल्प श्रीजी महाराज की वस्तुओं का "श्री स्वामिनारायण म्युझीयम" का

निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया है। इस कार्य में गाँव के हरिभक्त भी सहभागी होने हेतु संकल्प किये हैं। जिससे प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री को इस सभा में पधारने के लिए आमंत्रण दिया गया था। महाराजश्री के पदार्पण पर ग्रामजन खूब आनंदित हुए थे। महाराजश्री की आरती पूजा करके पारायण प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण में गांव की तरफ से आर्थिक योगदान का प्रस्ताव रखा गया था। श्रीहरि के प्रसादी का वस्त्र प.भ. ईश्वरभाई (धरमपुरवाला) ने महाराजश्री को अर्पण किया। सभा में पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी ने प्रसंगोचित प्रवचन किया। जेतलपुर, छपैया, वडनगर, चराडवा, इडर, टोरडा, अमदावाद, मूली के संत इस सभा में पधारे थे। पू. आचार्य महाराजश्री ने अंत में अत्यंत प्रसंन्न होकर स्वामी हरिजीवन के सत्संग के सेवा की प्रशंसा की और उनके शिष्यों को तथा ग्रामजनो को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल ने खूब उत्तम सेवा की।

- शा. आनंदजीवनदास

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव विभाग के हरिद्वार मंदिरमें मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी के शुभ संकल्प से एवं श्रीनरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूलीधाम के स.गु.कोठारी स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एवं पार्षद को. घनश्याम भगत के अथक परीश्रम से देशविदेश के हरिभक्तों के सहकार से श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का हिमालय की गोद में, देव भूमि हरिद्वार गंगामैया के पावन तटपर मूल श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का शिखरी मंदिर एवं अद्यतन धर्मशाला तैयार हो गयी हैं।

हरिभक्त जिस मंगल घडी की प्रतीक्षा काफी समय से कर रहे थे, वह समय वैशाख शुक्ल-९, ता. १७.०५.०५ से वै.शु.-१५, ता.२३. ०५.०५ तक सम्पन्न किया जायेगा। जिसके उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण तथा विष्णुयाग का आयोजन किया गया है।

इस प्रसंग पर समग्र धर्मकुल परिवार तथा धाम-धाम से ब्रह्मनिष्ठ संत पधारने वाले हैं। इस अवशर पर सभी हरिभक्तों को अमृतवाणी का लाभ लेने हेतु हमारा भावपूर्ण आमंत्रण है।

लि. श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी तथा मंगलमूर्ति प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव समिति वती महंत शा.स्वा. विश्वप्रकाशदास गुरु स.गु. स्वा. स्वयंप्रकाशदास का जयश्री स्वामिनारायण

फोन नं.९८३७२६११०७

नोट : इस उत्सव की पत्रिका बादमें भेंजी जायेगी।

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ तीन शिखर का मंदिर निर्मित हो रहा है। जिसमें श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी के मंदिर का प्रारम्भ ता. १३-३-०५ को महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी के हाथों से हरिभक्तों की उपस्थिति में किया गया। नव निर्माणाधीन मंदिर कलात्मक ढंग से तैयार किया जा रहा है। मंदिर की प्रतिष्ठा कार्तिक वद-२ ता. १७-११-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके हाथों से सम्पन्न होगी।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

लींबडी तपोवन मंदिर में तीसरा पाटोतसव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा साधु भक्तवत्सलदासजी तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में तपोवन मंदिर का तीसरा पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से धूमधाम के साथ सम्पन्न किया गया। समस्त हरिभक्तों ने तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सेवा करके महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया।

- को. माणिकलाल सोनी

कंकावटी (ता. धांगध्रा)

प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से भक्ति स्वामी तथा नीलकंठ स्वामीने सत्संग सभा में श्री नरनारायणदेव तथा श्री राधाकृष्णदेव का वफादार रहने के लिए तथा नियम, निश्चय, पक्ष का विशेष ध्यान रखने की बात की थी। संत हरिभक्तों ने भजन-कीर्तन तथा नित्य नियम करके सभा को विराम दिया था। - *रमेशभाई*

लीलापर (ता. हणवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १-३-०५ को सत्संग सभा में श्रीजीस्वस्म स्वामी तथा भक्तिविहारी स्वामी ने शिक्षापत्री महात्म्य मूली मंदिर तथा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन कवन तथा देव-आचार्य महाराजश्री के माहात्म्य को समझाकर सुन्दर लाभ दिया था। इसी प्रकार उपरोक्त संत मंडल ने रणजीतगढ गाँव में भी ता. १६-३-०५ को सत्संग सभा में युवान वर्ग के साथ बालकों को ज्ञान की बात दृष्टान्त के साथ समझाया। जिसमें श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने भी लाभ लिया था। श्रीजी नगर (ता. हळवद) उपरोक्त संत मंडलने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तीन दिन तक सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण की महिमा मूली श्री राधाकृष्णदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं धर्मवंशी परिवार का माहात्म्य बताया। नरनारायण

युवक मंडळ ने उत्तम सेवा का कार्य किया । - *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो (I.S.S.O.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शास्त्री स्वामी धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से ता. २६-२-०५ को भव्य शाकोत्सव के प्रसंग पर सर्वोपरि श्री हरिकृष्ण महाराज को पीताम्बर धारण कराकर भंटे के शाक को बघारते हुए दृश्य का सुन्दर दर्शन हो रहा था । गयैवा मंडलने शाकोत्सव का गीत गान किया । शास्त्री स्वामी धर्मवल्लभदासजीने हास्य के साथ शाकोत्सव की महिमा श्रीहरि की महिमा, धर्मकुल की महिमा, को बताया । अंत में नित्य, नियम, आरती करके सभी को प्रसाद वितरण किया गया ।

ता. ८-३-०५ को अपने मंदिर में महा शिवरात्री का उत्सव धूम धाम से मनाया गया । पूजारी स्वा. हरिनंदनदासने श्रीहरिकृष्ण महाराज को भगवान शंकर का स्वरूप धारण करवाया था । बाद में योग्य विद्वान पंडित से महादेवजी का पूजन अर्चन करवाया गया था । पूजन के मुख्य यजमान प.भ. अश्विनभाई का परिवार था । इस प्रसंग पर छोटे भगत धीरूभाई, वसंतभाई त्रिवेदी, चकोरी बहन, बहनो की सेवा में हीरजीभाई कच्छी ब्रह्मदेवभाई, विष्णुभाई इत्यादिने सहयोग दिया । इस मंदिर में हजारों भक्तजनोने दर्शन का लाभ लिया । पूज्य दोनो आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी तल रही है ।

- प्रवीणभाई भगत, घनश्यामभाई)

जाहर खबर

पुलिश कमिश्नर क्राईम ब्रांच अहमदाबाद शहर डॉ. नरेन्द्र के अमीन के पत्र क्रमांक म.पो.क.मि./क्राईम/३७०/०५ ता. ९-३-०५ के पत्र से सूचित किया जाता है कि अहमदाबाद शहर क्राईम ब्राच पो.स्टे.क.गु.र.नं. ५/०५ के काम मे अभियक्तों के नाम नीचे के अनुसार प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

१.	कनु भगत (धोलका)	५.	बापू स्वामी (धोलका)
२.	नीलकंठ स्वामी (पेथापुरवाला)	६.	माधवदास स्वामी (चांदलोडिया)
३.	चेतन स्वामी (वहेलालवाळा)	७.	नाना पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर गुरुकुल)
४.	मुकुंद स्वामी (धोलका)	८.	राजू ड्राईवर (कोटेश्वर गुरुकुल)

उपरोक्त व्यक्तियों को संस्था की तरफ से सूचना होने के बाद भी भागे हुए है, जिससे उन्हे स्वामिनाारयण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की संस्था में से त्यागी पंच द्वारा निष्कासित किया गया है । जिससे अहमदाबाद देश की कोई भी संस्था में आश्रय देना नहीं है या रखना नही है । *- चीफ कारभारी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद ।*

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अमदाबाद श्री स्वामिनारायण बाग : पार्षदश्री नथुभगत ता. २०-३-०५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

डांगरवा : प.भ. पटेल डाहीबहेन जेठाभाई ता. ९-२-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई हैं ।

अहमदाबाद शाहीबाग : प.भ. ब्रह्मभट्ट भरतभाई पी. वकील की माताजी शांता बहन प्रभुलाल वकील महाशिवरात्री ता. ८-३-०५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं ।

उमेदगढ (ता. ईडर) : प.भ. जसकरणभाई मोतीभाई पेटल श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

हस्सुरपुर देवणिया : प.भ. जसकुभाई (स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर भंडार संचालक) की माताजी राणाभाई बहन खोडाभाई माघ शुक्ल-१४ ता. २२-२-०५ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है ।

जीरागढ हालार (मूलीदेश) : प.भ. परसोत्तमभाई करसनभाई की माताजी ता. २३-३-०५ को श्रीहरिका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई हैं ।

नवा वाडज : मूक सेवक प.भ. बाबूभाई रवजीभाई कथीरीया (नवा वाडज मंदिर के ट्रस्टी उम्र : ५७) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. २३-३-०५ को अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. दिनेशभाई के भगत (प्रसिद्ध सत्संगी कार्यकर्ता) की धर्मपत्नी अ.सौ. इन्दिराबहन डी. भगत ता. ३१-३-२०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती अक्षरनिवासी हुई हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. जादवजीभाई तुलसीदास पटेल (विमल वोशिंग पावडरवाला धरपुरवाला) उ. ७५ वर्ष ता. २६-३-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।



धरियावद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजीकी अंगन्यास विधि।



धरियावद मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग प
प.पू.ध.धु. आचार्य
महाराजश्री की
उपस्थिति में मुख्य
अतिथि दिव्य भास्व
ग्रुप के शेठ श्री
अग्रवालजी प्रासंगि
प्रवचन करते हुए।



धरियावद में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में राजस्थान की परंपरा का दर्शन हो रहा है।



उदयपुर जिला में धरियावद का तीन शिखरवाला भव्य मंदिर।



ईडर मंदिर में वहाँ के मुस्लिम अग्रणी प.पू. महाराजश्री का पुष्पहार से सम्मान करके आशीर्वाद लेते हुए।



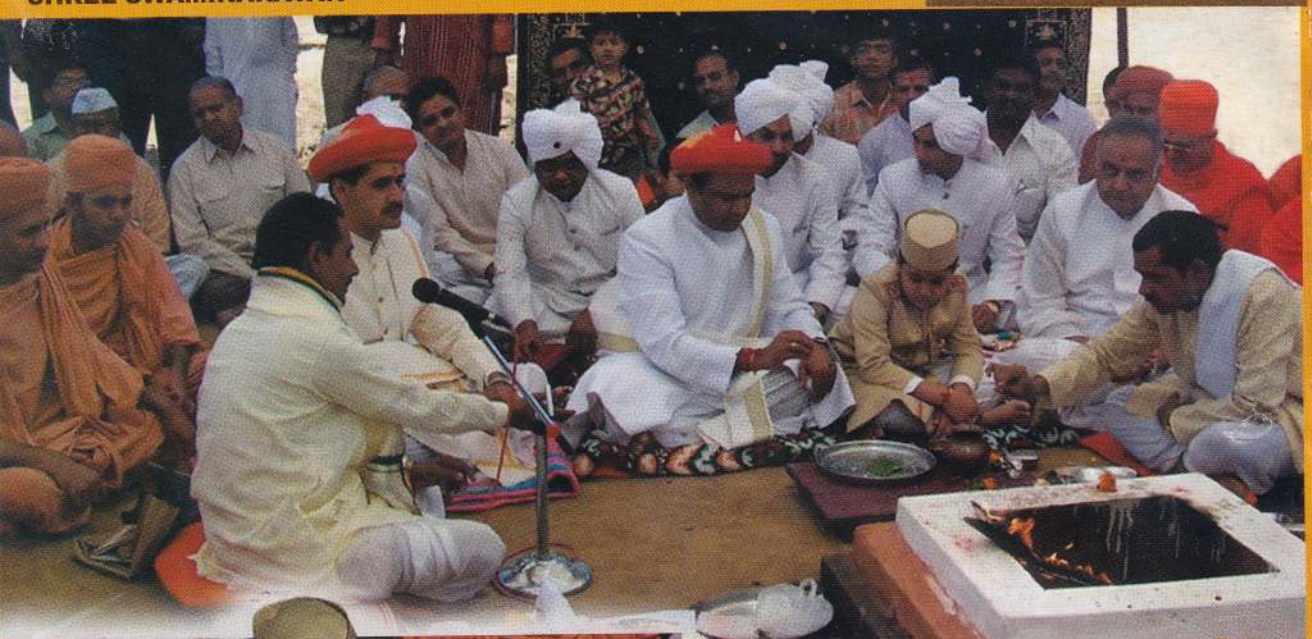
श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के यजमान प.भ. विठ्ठलभाई डाभी परिवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को श्रीजी महाराज के प्रसाद की सीकड़ श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए अर्पण करते हुए

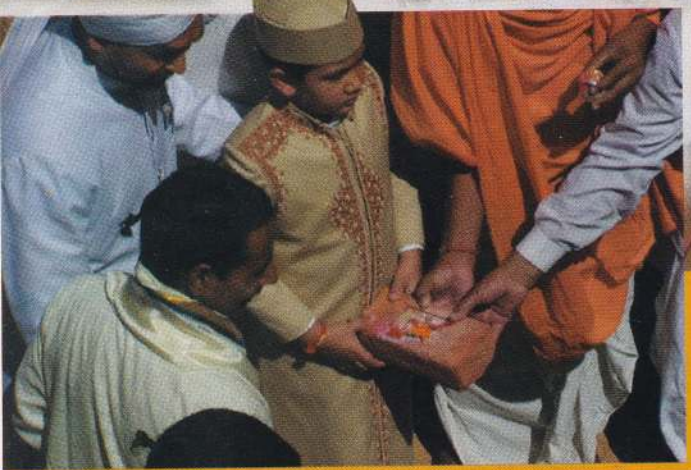


चराडवा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित समूह महापूजा



चराडवा मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर आयोजित कथा की











प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का शुभ संकल्प ऐसे श्री स्वामिनारायण म्युजियम की खात पूजा विधि प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन दोनो देश के आचार्यों की उपस्थिति में नारायणपुरा विस्तार में धूमधाम से सम्पन्न, उस दिव्य प्रसंग की बोलती तस्वीर।

Praful